

दीन-ए-इलाही

ईस्टर के गुप्त रहस्य

लेखक :

रियाज़ अहमद गौहर शाही

प्रकाशक :- आल फेथ स्पिरिट्युअल मूवमेन्ट (आयरलैण्ड)

All Faith Spiritual Movement

IRELAND

**उपरोक्त लेखन के समस्त अधिकार सुरक्षित हैं। यह पुस्तक ईश्वर के खोजियों
और ईश्वर से प्रेम करने वालों के लिए एक उपहार है।**

सूचना वक्ताओं के लिए

यह पुस्तक सत्यवादियों , न्याय-प्रिय और ईश्वर के चाहने वालों तक पहुँचानी है ।
दुश्मन इसको बरबाद करने का प्रयत्न करेंगे ।

प्रकाशक :

आल फेथ स्पिरिच्युअल मूवमैन्ट के आर्गेनाइजर्स
जाहिद गुलजार और सुभाष शर्मा ने R. A. G. S. इन्टरनैशनल बर्तानिया और अमेरिकन
सूफी इन्सटीच्यूट अमेरिका के सहयोग से प्रकाशित कराई ।

वर्ष प्रकाशन :

जुलाई 2000/ स्थान प्रकाशन :- जालन्धर (भारत) / संख्या प्रकाशन :- 1000/ संस्करण नं०-१

संकलित :

मोहम्मद यूनस अलगौहर (बर्तानिया) अमजद अली (संयुक्त अरब संघ)



शरीफ की पहाड़ियों और लाल बाग में अल्लाह के प्रेम के लिए तपस्या की। अल्लाह को पाने की खातिर दुनिया छोड़ी, फिर उसी के हुक्म ही से दोबारा दुनिया में आए। लाखों दिलों में अल्लाह का जिकर बसाया और लोगों को अल्लाह की मुहब्बत की ओर प्रेरित किया। हरेक मज़हब वालों ने गौहर शाही को मस्जिदों, मन्दिरों, गुरुद्वारों और गिर्जाघरों में रुहानी खिताब के लिए आमन्त्रित किया और मानसिक शान्ति प्राप्त की। अनन्त स्त्री-पुरुषों ने उनकी तालीम से गुनाहों से तौबा की और अल्लाह की ओर झुक गये। अनगिनत ला-इलाज मरीज उनके रुहानी इलाज से ठीक हुए। फिर अल्लाह ने उनका चेहरा चांद पर दिखाया। फिर हिजर-ए-अस्वद में भी उनकी तस्वीर प्रकट हुई। पूरी दुनिया में उनकी प्रसिद्धि हो गई। परन्तु

अन्धविश्वासी मौलवियों को और वलियों से ईर्ष्या रखने वाले मुसलमानों को यह व्यक्ति पसन्द न आया। उनकी पुस्तकों की लिखित में फेर-बदल करके उन पर कुफर और कत्ल के उपयुक्त फ़तवे लगाये।

मानचैस्टर में उनके निवास स्थान पर पैट्रोल बम फैंका, कविट्री में उनके भाषण के मध्य हैंडग्रनेड बम से आक्रमण किया गया। लाखों रूपए उनके सिर की कीमत रखी गई। देश के अन्दर उन्हें फ़ंसाने के लिए पांच प्रकार के संगीन झूठे मुकद्दमे कायम किये गये। नवाज़ शरीफ के कारण सिन्ध की हकूमत भी इसमें शामिल हो गई। दो केस कत्ल, नाजायज़ हथियार, नाजायज़ कब्ज़ों के दोष भी लगाए गये। अमेरिका में भी एक स्त्री से ज्यादती और बन्धक रखने का मुकद्दमा बनाया गया। अखबारों ने इन्हें ज़माने में खूब बदनाम किया। अन्त में अदालतों ने सुनवाई और तहकीकात के बाद सभी मुकद्दमे झूठे मानते हुए उन्हें खारिज कर दिया। अल्लाह ने अपने इस दोस्त को हर मुसीबत से बचाए रखा।

भूमिका

चांद, सूर्य, हिजर-ए-अस्वद, शिव मन्दिर और कई दूसरे स्थानों पर भी तस्वीर-ए-गौहर शाही जाहिर होने के बाद प्रायः मुस्लिम और गैर-मुस्लिम का विचार और विश्वास है कि यही व्यक्ति शख्से महदी, काल्की अवतार और मसीहा है जिसका विभिन्न धार्मिक पुस्तकों में वर्णन आया है। आओ आप भी उन्हें परखने की कोशिश करो और इसकी जानकारी के लिए हम से सम्पर्क करें और उनकी पुस्तकों द्वारा भी उन्हें पहचानने का प्रयत्न करें।

ALL FAITH SPIRITUAL MOVEMENT

प्रस्तावना

जो धर्म आकाशीय पुस्तकों के माध्यम से स्थापित हुए वे ठीक हैं यदि उनमें किसी प्रकार का परिवर्तन न किया गया हो।

धर्म किश्ती और विद्वान् मल्लाह की तरह होते हैं। यदि किसी एक में भी नुक्स हो तो मंजिल पर पहुंचना बहुत मुश्किल है। केवल औलिया टूटी-फूटी किश्ती को भी किनारे लगा देते हैं। यही कारण है कि टूटे-फूटे लोग औलिया के गिर्द एकत्रित हो जाते हैं।

धर्म से परे अल्लाह की मुहब्बत है जो सब धर्मों का निचोड़ (अर्क) है, जबकि अल्लाह का नूर मार्ग दर्शक है।

तीन भाग इल्मे जाहिर के और एक भाग इल्मे बातन का है जो खिजर (विष्णु महाराज) द्वारा ही सार्वजनिक होता है।

अल्लाह की मुहब्बत ही उसकी कृपा पाने का साधन है। जिस दिल में खुदा नहीं, कुत्ते उससे श्रेष्ठ हैं क्योंकि वे अपने मालिक से मुहब्बत करते हैं और मुहब्बत की ही वजह से मालिक का सानिध्य प्राप्त कर लेते हैं। वरना कहां कुत्ता और कहां हज़रत इन्सान।

यदि तुझे जन्त और हूर की तमन्ना है तो खूब इबादित कर ताकि ऊँची से ऊँची जन्त मिल सके।

यदि तुझे अल्लाह की तलाश है तो रुहानियत भी सीखो। तो इस राह पर चलते हुए अल्लाह के वसाल तक पहुंच सको।



इन्सान अंगाल से अबद तक

जब अल्लाह ने रूहों को बनाना चाहा तो कहा 'कुन' तो बेशुमार रूहें बन गईं। अल्लाह के सामने और समीप रूहें नवियों की, फिर दूसरी सफ (पंक्ति) में वलियों की, फिर तीसरी पंक्ति में मोमिनों की। फिर उनके पीछे आम इन्सानों की। फिर नज़र की सीमा से दूर पंक्ति में औरतों की रूहें बन गईं। फिर उनके पीछे हैवानी रूहें, धात्विक (नबाती), फिर जमादी (स्थिर) रूहें जिनमें हिलने-जुलने की भी ताकत नहीं थी अस्तित्व में आईं।

अल्लाह के दाईं ओर फरिश्तों की फिर उसके बाद हूरों (परियों) की रूहें थीं जो रब्ब के चेहरे को न देख सकीं। यह वजह है कि फरिश्ते रब्ब का दीदार न कर सके। फिर पीछे नूरी मवक्लात की रूहें जो दुनिया में आकर नबियों, वलियों की सहायक हुईं। फिर बाईं ओर जिन्नात की रूहें, फिर पीछे सफली मवक्लात, फिर खबीसों की रूहें जो दुनिया में आकर अबलीस की सहायक हुईं।

दाईं, बाईं ओर निगाह से दूर वाली रुहें (आत्माएं) रब्ब का जलवा न देख सकीं। यह कारण है कि जिन, फ़रिश्ते तथा औरतें रब्ब से बात तो कर सकते हैं, परन्तु दीदार नहीं कर सकते।

ब्रह्माण्ड में एक आग का गोला था। हुक्म हुआ ठण्डा हो जा, फिर उसके टुकड़े फ़िज़ा में बिखर गये। चांद, मरीख, मुश्तरी यह दुनिया और सितारे सब इसी के टुकड़े हैं जबकि सूर्य वही शेष बचा हुआ गोला है, यह जमीन राख ही राख बनी। जमादी (वनस्पतिक) रुहों को नीचे भेजा गया जिनके ज़रिये राख जमकर पत्थर हो गई। फिर नबाती (वनस्पति के) रुहों को भेजा गया जिन के कारण पत्थरों में वृक्ष उग आये। फिर हैवानी रुहों के ज़रिये हैवान अस्तित्व में आये।

अल्लाह ने सब रूहों से यह भी पूछा था क्या मैं तुम्हारा रब्ब हूँ । सब ने इकरार किया और सिजदा किया अर्थात् पत्थरों और वृक्षों ने भी सिजदा (झूककर नमस्कार) किया था ।

(वालंजम वालशिंजर यसीजदान) सूरौ अलरहमान अलकुरान

फिर अल्लाह ने रूहों की परीक्षा के लिए बनावटी दुनिया, बनावटी स्वाद (लज्जात) बनाए और कहा यदि कोई इनका इच्छुक है तो प्राप्त कर ले। बेशुमार रूहें अल्लाह से मुँह मोड़ कर दुनिया की तरफ लपकीं और दोजख (नर्क) उनके भाग्य में लिख दिया गया। फिर अल्लाह ने बहिश्त (स्वर्ग) का नज़ारा दिखाया जो पहली हालत से अच्छा समर्पय (अतायत) और बन्दगी वाला था। बहुत-सी रूहें उधर लपकीं इनके भाग्य में बहिश्त (स्वर्ग) लिख दिया। बहुत-सी रूहें कोई निर्णय न कर पाईं।

इन्हें फिर रहमन और शैतान के दरम्यान कर दिया। वही रुहें दुनिया में आकर बीच में फंस गईं फिर जिसके हाथ लग गई उसी की ही हो गई।

बहुत सी रुहें अल्लाह के जलवे देखती रहीं। न ही दुनिया की और न ही जन्त की चाह। अल्लाह को उनसे मुहब्बत और उन्हें अल्लाह से मुहब्बत हो गई। इन्हीं रुहों ने अल्लाह के लिए संसार को छोड़ा और जंगलों में बसेरा किया। रुहों की ज़रूरत और दिल लगी के लिए अठारह हज़ार मखलूक-छः हज़ार पानी में, छः हज़ार खुशकी में और छः हज़ार हवाई और आसमानी-पैदा की गई।

फिर अल्लाह ने सात प्रकार की जन्त और सात प्रकार की दोज़ख बनाई

जन्तों के नाम

1. खल्द
2. दारा अल्सलाम
3. दारा अल्करार
4. अदन
5. अल्भावी
6. नईम
7. फिरदौस

दोज़खों के नाम

1. सक्र
2. सईर
3. नती
4. हत्म
5. हजीम
6. जहन्नुम
7. हाबिया

मंदर्जा बाला सारे नाम सरयानी ज़वान (वह ज़वान जिसमें अल्लाह फरिशतों से मुखातिव होता है) के हैं मज़हबों की धारणा है कि अल्लाह जिसे चाहे दोज़ख (नर्क) में और जिसे चाहे बहिश्त (स्वर्ग) में भेज दे। यदि वहीं से जिस रुह को दोज़ख में भेजा जाता तो वह एतराज़ करती कि मैंने कौन-सा जुर्म किया था? अल्लाह कहता ‘तू ने मेरी ओर से मुंह मोड़ कर दुनिया मांगी थी।’ रुह कहती वह तो केवल नादानी में इकरार था। परन्तु अमल तो नहीं किया था। फिर इस हुज्जत को पूरा करने के लिए रुहों को नीचे इस दुनिया में भेजा।

‘आदम अलीय अलस्लाम जिन्हें शंकर जी भी कहते हैं जन्त की मिट्टी से इनका शरीर बनाया गया फिर रुह-ए-इन्सानी के अतिरिक्त कुछ और मखलूकें भी उसमें डाल दी गईं। जब आदम अलीया अलस्लाम का शरीर बनाया जा रहा था तो शैतान ने हसद (ईर्ष्या) से थूका था। जो नाभि पर गिरा और उस थूक के कीटाणु भी उस शरीर में सम्मिलित हो गए। शैतान जिन्हों की कौम (जाति) से है।

एक हदीस में है कि जब इन्सान पैदा होता है तो उसके साथ एक शैतान जिन्न भी पैदा होता है। शरीर तो केवल मिट्टी का मकान है जिसके अन्दर 16 मखलूकों को बन्द कर दिया जबकि खनास और चार परिन्दे और भी हैं।

आदम की बाई पसली से औरत की शक्ल का मवाद निकला। उसमें रूह डाल दी गई जो माई हव्वा बन गई। बाद में बहिश्त से निकाल कर आदम अलीया अलस्लाम को श्री लंका और माई हव्वा को जद्दा में उतारा गया जिनके ज़रिए एशियाइयों की पैदायश का क्रम आरम्भ हो गया और आसमान से बाकी रूहें भी आनी शुरू हो गई। रूहों की तालीम और तरबीयत के लिए मज़हबों की सूरत में मदरसे स्थापित हुए और रोज़-ए-अज़ल की तकदीर के मुताबिक कोई किसी मज़हब में और कोई बिना मज़हब ही रहीं। अल्ला की प्यारी रूहें भी इस दुनिया में आईं। कोई मुस्लिम के घर, कोई हिन्दुओं, कोई सिक्खों और कोई इसाइयों के घर पैदा हो गई। और अपने मज़हब के द्वारा अल्लाह को प्राप्त करने की कोशिश करने लगीं। यही कारण है कि हरेक मज़हब में विशेष ने रहबानियत अखतियार की। कुछ लोग कहते हैं कि इस्लाम में रहबानियत नहीं है। यह धारणा गलत है। हज़ूर पाक भी गार-ए-हरा में जाते थे। शेख अब्दुल कादिर जिलानी, ख्वाजी मुईनुद्दीन अजमेरी, दाता अली हज़वेरी, बरी इमाम बाबा फ़रीद, शहबाज़ कलन्दर आदि ने भी रहबानियत (एकान्तवास) में तपस्या के बाद ही इतने उच्च स्थान प्राप्त किए और इनके ज़रिये दीन की इशायत हुई।



दुनिया में इन्सान की दुनियाद....

पेट में नुतफाए इन्सानी के बाद खून को इकट्ठा करने के लिए रुहे-जमादी आती है। फिर रुहे नबाती के ज़रिये बच्चा पेट में बढ़ता है। चार मास के बाद रुहे-हैवानी शरीर में दाखिल की जाती है जिसके ज़रिये बच्चा पेट में हरकत करता है। इन्हें अर्जी रुहें कहते हैं। फिर पैदायश के बाद रुहे-इन्सानी दूसरी मखलूकात के साथ आती है। इन्हें समावी रुहें कहते हैं।

यदि बच्चा पैदायश से थोड़ी देर पहले ही पेट में मर जाए तो उसका जनाज़ा नहीं होता कि वह हैवान था। पैदायश से थोड़ी देर बाद मर जाए तो जनाज़ा (अर्थी) ज़रूरी है। वह रुहे इन्सानी के आने की वजह से इन्सान बन गया था और नफस ने भी नाफ़ के स्थान पर अपने साथियों के साथ डेरा लगा लिया था। यदि इसमें जमादी रुह ताकतवर है तो वह पहाड़ों पर रहना पसन्द करता है। रुह-ए-नबाती की वजह से इन्सान फूलों और वृक्षों से लगाव रखता है। रुह-ए-हैवानी के प्रभाव से जानवरों से प्यार और जानवरों जैसे काम करता है जबकि नफस की शक्ति की तरह की होती है। उसके प्रभाव से कुत्तों जैसे काम और कुत्तों से प्यार करता है और मानसिक जागरूकता से इन्सान फ़रिश्तों की तरह बन जाता है।

इन्सान के मरने के बाद समावी रूहें आसमानों को लौट जाती हैं जो एक ही शरीर के लिए सुरक्षित हैं। अरजी रूहें नफूस सहित इसी दुनिया में रह जाती हैं। अरजी रूहें एक से दूसरे फिर तीसरे शरीर में स्थानान्तरित होती रहती हैं। क्योंकि इनका रोज़-ए-महशर (क्यामत) से कोई सम्बन्ध नहीं। लेकिन पाकीज़ा नफूस कबरों में रह कर लोगों को लाभ पहुंचाते हैं और आप भी बन्दगी करते रहते हैं। जैसा कि जब शब-ए-मुअराज में हज़ूर-ए-पाक मूसा की कबर से गुज़रे तो देखा कि मूसा अपनी कबर में नमाज़ पढ़ रहे हैं। जब आसमानों पर पहुंचे तो देखा मूसा वहां भी मौजूद हैं।

बदकार लोगों के ताकतवर नफ़स अपने बचाव के लिए शैतानों के टोले में मिल जाते हैं और लोगों के शरीरों में प्रविष्ट होकर उन्हें हानि पहुंचाते हैं। उन्हें बद-रूहें कहते हैं। अंजील में है कि ईसा बद-रूहों को निकाला करते थे।

अरजी रुहें और नफूस इसी दुनिया में, रुह-ए-इन्सानी आलम अलीइयन या सजीइयन में और लताइफ़ यदि ताकतवर हैं तो वे भी अलीइयन में, वरना कबर में ही नष्ट हो जाते हैं। नफ़स की वजह से इन्सान नापाक हुआ।

बुल्लेशाह के अनुसार :

इस नफ़स पलीत ने प्लीत कीता

असां मुड्ढों प्लीत न सी ।

नफ़स को पाक करने के लिए किताबें उतरीं, नबी, वली आये। कहीं उसे दोज़ख से डराया गया, कहीं बहिश्त की लालच दी गई। रियाज़त, इबादत और रोज़ों के माध्यम से इसे सुधारने की कोशिश की गई और जन्नत के हक्कदार भी हो गये। और बहुत से लोगों ने वातनी इलम के ज़रिये उसे पाक भी कर लिए और अल्लाह के दोस्त बन गये।

यह शैतानी कीटाणुओं का मजमूआ है। नाफ (नाभि) में इसका ठिकाना है। सब नबियों, वलियों ने इसकी शरारत से पनाह मांगी। इसका भोजन फास्फोरस और बदबू है जो हड्डियों, कोयले और गोबर में भी होती है। हरेक मज्जहब में जनाबत के बाद नहाने पर ज़ोर दिया गया है। क्योंकि जनाबत की बदबू मुसामों से भी निकलती है। बदबूदार प्रकार की वस्तुओं और बदबूदार प्रकार के जानवरों के मांस को भी वर्जित किया है।

रोज-ए-अजल में अल्लाह के सामने वाली समस्त रूहें जमादी तक एक दूसरे से वाकिफ और मुतहिद हो गईं। रूह जमादी की वजह से इन्सानों ने पत्थरों के मकान बनाये और रूह नबाती की वजह से वृक्षों की लकड़ियों से छत बनाये। वृक्षों की छाया से भी लाभान्वित हुए। वृक्षों ने इन्हें साफ-सुथरी ऑक्सीजन पहुंचाई। पीछे वाली हैवानी रूहें जो दुनिया में आकर जानवर बन गये सब इन्सानों के लिए हलाल कर दिये गये।

जबकि इनसे ही सम्बन्धित परिन्दे (पक्षी) भी हलाल कर दिये गये। बाईं ओर जिन और सफली मवक्लात बने फिर भी उनसे पीछे की तरफ खबीस रूहें जो अन्त में खुदा की शत्रु हुईं और वे हैवानी, नबाती और जमादी रूहें जो खबीसों के पीछे आई थीं उन्होंने इन्सानों से दुश्मनी की। उनकी रूह जमादी के दुनिया में आने से राख कोयला बनी जिसकी गैस लोगों के लिए हानिकारक थी।

उनकी रूह नबाती से खतरनाक और कांटेदार, आदमखोर प्रकार के वृक्ष अस्तित्व में आए और उनकी रूह हैवानी से आदमखोर और दरिन्दा किस्म के जानवर पैदा हुए और उनसे सम्बन्धित पक्षी भी इन्हीं की इन्सान से दुश्मनी के स्वभाव के कारण हराम करार दिए गये। जिन की पहचान यह है कि वे पंजों से पकड़ कर खुराक खाते हैं।

दाईं ओर की रूहों को इन्सान का सेवक सूचनावाहक और सहायक बना दिया और इन्सान को सब से अधिक बुद्धिमत्ता तथा वर्चस्व प्रदान करके अपना खलीफा नियुक्त कर दिया। अब इन्सान की मर्जी, मेहनत और भाग्य है कि खलाफत स्वीकार करे या टुकरा दे। नफस स्वप्न में शरीर से बाहर निकल जाता है और इस बन्दे की शक्ल में जिनों की शैतानी महफिलों में घूमता है। नफस के साथ खनास भी होता है जिसकी शक्ल हाथी की तरह होती है और नफस और दिल के मध्य बैठ जाता है। इन्सान को गुमराह करने के लिए नफस की सहायता करता है। इसके अतिरिक्त परिन्दे भी इन्सान को गुमराह करने के लिए चारों आनन्दों के साथ चिमट जाते हैं। जैसे दिल के साथ मुर्गा, जिसके कारण दिल पर शहवत हावी रहती है। दिल के ज़िकर से वह मुर्गा, मुर्ग-ए-बिस्मल बन जाता है और हराम और हलाल के फर्क को जानने की बुद्धि देता है। फिर इस कलब (दिल) को कलब-ए-सलीम कहते हैं। सिरी के साथ कब्वा, कब्वे की वजह से हरस और खफी के साथ मोर, मोर की वजह से हस्द (ईर्ष्या) और अखफी के साथ कबूतर, कबूतर की वजह से बख्ल आ जाता है और उनकी खस्लतें, लुताइफ को हिरस हस्द पर मजबूर कर देती हैं। जब तक लताइफ मुनवर

न हो जाएं। इब्राहिम अलीया अलस्लाम के शरीर से इन्हीं चार परिन्दों को निकाल कर पाकीजा करके दोबारा जिस्म में डाला गया था। मरने के बाद पाकीजा लोगों के ये परिन्दे वृक्षों पर बसेरा बना लेते हैं। बहुत से लोग जंगलों में कुछ दिन रह कर परिन्दों जैसी आवाजें निकालते हैं। और ये परिन्दे उनसे घुल-मिल जाते हैं और उनके छोटे-मोटे इलाजों में उनके सहायक बन जाते हैं।

...एक अहम नुक्ता...

- नफ़्रस का सम्बन्ध शैतान से है।
- सीने के पांचों लताइफ़ का सम्बन्ध पांचों रक्खूलों से है।
- अना का सम्बन्ध अल्लाह से है।
- इसी तरह इस जिस्म का सम्बन्ध कानिल मुशिर्दि से है
और जो भी मख्यलूक जिस निष्कृत से खाली है वह इसके फ़ैज़ से महसूर और आरी है।

लतीफ़-ए-कलब



मांरन के लोथड़े को उर्दू में दिल और अरबी में फ़वाद बोलते हैं। और उस मखलूक को जो दिल के साथ है कलब (मन) बोलते हैं। इनकी नबूत और इल्म आदम को मिला था। हदीस में है कि दिल और मन में अन्तर है। इस दुनिया को नासूत बोलते हैं। इसके अतिरिक्त और जहान भी हैं यानि मल्कूल, अन्कबूत, लाहूत, वहदत और अहदित।

ये स्थगन नासूत में गोला फटने से पहले थे और इनकी मखलूकें भी पहले से ही मौजूद थीं। फरिश्ते रुहों के साथ बने परन्तु मलाइका और लताइफ़ पहले ही से इन स्थानों में विद्यमान थे। बाद में आलम-ए-नासूत में भी इन सितारों पर दुनिया आबाद हुई। कोई मिट गये कोई इन्तजार में थे। यह मखलूक यानि लताइफ़ और मलाइका रुहों के अमरे कुन 70 हजार वर्ष पहले बनाये गये थे। और इनमें से मन को मुहब्बत के स्थान में रखा गया और इसी द्वारा इन्सान का राबता (सम्बन्ध) अल्लाह से जुड़ जाता है। अल्लाह और इन्सान के मध्य यह रेलीफोन आप्रेटर है। इन्सान पर दलील और विधाएं इसी के ज़रिये वारिद होती हैं।

जबकि लताइफ़ की प्रार्थनाएं भी इसी के ज़रिये अर्श बाला पर पहुंचती हैं। लेकिन यह मखलूक स्वयं मल्कूत से आगे नहीं जा सकती। इसका मुकाम खुल्द है। इसकी अबादत (भक्ति) भी अन्दर और तस्बीह भी इन्सान के ढांचे में है। इसकी इबादत के बिना जन्त के रहने वाले भी अफसोस करेंगे। क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया है कि इन लोगों ने समझ रखा है कि हम उन्हें नेकोकारों के बराबर कर देंगे। क्योंकि मन (कलब) वाले जन्त में भी अल्लाह अल्लाह करते हैं।

शारीरिक भक्ति मरने के बाद समाप्त हो जाती है। जिनके कलब और लताइफ़ अल्लाह के नूर से ताकतवर नहीं वे कबरों में ही खस्ता हालत में रहेंगे या नष्ट हो जाएंगे। जबकि मनवर और ताकतवर लताइफ़ मुकाम-ए-अलीइयन में चले जाएंगे। क्यामत के बाद जब दूसरे जिस्म दिये जाएंगे तो फिर ये लताइफ़ भी इन्सानी रुह के साथ शरीर में दाखिल होंगे। जिन्होंने इन्हें दुनिया में अल्लाह अल्लाह सिखाया था वहां भी अल्लाह अल्लाह करते रहेंगे और वहां जाकर भी उनके मरतबे (ख्याति) बढ़ते रहें। और जो इधर दिल के अन्धे थे वे उधर भी अन्धे रहेंगे। क्यों क्रिया स्थली (मैदान-ए-अमल) यह दुनिया थी और वे एक ही जगह स्थाई हो जाएंगे।

इसाइयों, यहूदियों के अतिरिक्त हिन्दू धर्म भी इन मखलूकों का काइल है। हिन्दु इन्हें शक्तियां और मुसलमान इन्हें लताइफ़ कहते हैं। कलब (मन) दिल के बाई ओर दो इंच की दूरी पर होता है। और इस मखलूक का रंग ज़रद (पीला) है। इसकी जागरूकता से इन्सान ज़रद रोशनी अपनी आंखों में महसूस करता है। बल्कि कई आमिल हज़रात इन शक्तियों के रंगों से लोगों का इलाज करते हैं।

प्रायः लोग अपने दिल की बात को ठीक मानते हैं। यदि वास्तव में दिल सच्चे हैं तो सब दिल वाले एक क्यों नहीं। साधारण आदमी का मन सनूबरी होता है जिसमें कोई सुध-बुध नहीं होती। नफ़स और खनास के गलबे या सीधीपन के कारण गलत निर्णय भी दे सकता है।

कलब-ए-सनूबरी पर विश्वास नादानी है। जब इस दिल में अल्लाह का ज़िक्र शुरू हो जाता है फिर उसमें

नेकी और बदी की तमीज़ और समझ आ जाती है। इसे कलबे सलीम कहते हैं। फिर ज़िक्र की अधिकता से उसका रुख़ रब्ब की तरफ़ मुड़ जाता है। इसे कलब-ए-मुनीर कहते हैं। यह दिल बुराई से रोक सकता है परन्तु यह सही निर्णय नहीं कर सकता। फिर जब अल्लाह की तज्जलियात (कृपा दृष्टि) उस दिल पर गिरना शुरू हो जाती है तो उसे कलब-ए-शहीद कहते हैं।

हृदीस-शिकस्ता दिल और शिकस्ता कबर पर अल्लाह की रहमत पढ़ती है।

उस समय जो दिल कहे चुप करके मान ले क्योंकि तजली से नफ़स भी सन्तुष्ट हो जाता है और अल्लाह जल्ल-अल्वरीद हो जाता है। फिर अल्लाह कहता है कि मैं उसकी जुबान बन जाता हूँ जिससे वह ओलता है। उसके हाथ बन जाता हूँ जिससे वह पकड़ता है।



रुह-ए-इनसानी (इन्सान की आत्मा)

इसकी नवूत और इल्म इब्राहिम को मिला था

यह दाएं पिस्तान (मम्मे) के समीप होती है। ज़िक्र के गुण और विचार से इसको भी जगाया जाता है। फिर इधर भी एक धड़कन अस्तित्व में आ जाती है। इसके साथ (ज़िक्र) या अल्लाह मिलाया जाता है। फिर इन्सान के अन्दर दो बन्दे ज़िक्र करना शुरू कर देते हैं और इसका पद कलब वाले से बढ़ जाता है। रुह का रंग सुरख मायल (लाल) होता है और इसकी बेदारी से जबरूत तक (जो जिब्राइल का स्थान है) पहुंच हो जाती है। गज़ब के पड़ोसी होते हैं जो जलकर जलाल बन जाते हैं।

लतीफ़-ए-मिरी

इसकी नवूत और इल्म मूसा को मिला था

यह मखलूक सीने के दरम्यान से बाएं पिस्तान के मध्य होती है। इसे भी याहर्ड या क्यूम की ज़रबों (गुणा) और विचार से बेदार (जागृत) किया जाता है। इसका रंग सफेद होता है। स्वप्न या अनूदगी में लाहूत तक पहुंच रखती है। अब तीन मखलूकें ज़िक्र कर रही हैं और इसका दर्जा भी उन दो से बढ़ गया है।

लतीफ़ा ख़फ़ी

इसकी नवूत और इल्म ईसा को मिला था

यह सीने के मध्य में दाएं पिस्तान के मध्य होती है। इसे भी ज़रबों (गुणा) के ज़रिये या बाहद सिखाया जाता है। इसका रंग सब्ज़ (हरा) है और इसकी पहुंच बहदत से है। और अब चार बन्दों की इबादत से दर्जा और बढ़ गया।

लतीफ़-ए-अख़फ़ी

इसकी नवूत और इल्म हज़ूर पाक को मिला

यह मखलूक सीने के मध्य है या फहद का ज़िक्र इसके लिए साधन है। इसका रंग जामुनी है। इसका सम्बन्ध भी मुकाम-ए-वहदत के उसे पर्दे से है जिसके पीछे तख्त-ए-खुदावन्द है।

पांच लतीफों का बातनी इल्म भी पांचों नबियों को क्रमवार प्राप्त हुआ। और हर लतीफ़ का आधा ज्ञान नबियों से बलियों तक पहुंचा। इस प्रकार इस के दस भाग बन गये। फिर बलियों से खास इस इल्म से लाभान्वित हुए। जबकि ज़ाहरी इल्म, ज़ाहरी जिस्म, ज़ाहरी जुबान नासूत्र और नफूस से सम्बन्ध रखता है। यह साधारण लोगों के लिए है और इसका इल्म ज़ाहरी किताब में है जिसके तीस हिस्से हैं। इल्म-ए-बातन भी नबियों पर वही के ज़रिये नाज़ल हुआ। इस कारण इसे भी बातनी कुरान बोलते हैं। कुरान की बहुत-सी सूरतें बाद में मन्सूख की जाती हैं। इसकी वजह यही थी कि कभी-कभी सीने का इल्म भी हज़ूर-पाक की जुबान से आम में अदा हो जाता जो कि खास के लिए था। बाद में यह इल्म सीना-ब-सीना बलियों में चलता रहा और अब किताबों के माध्यम से सार्वजनिक कर दिया गया।

लतीफ़ा-ए-अना

यह मखलूक सिर में होती है और इसका कोई रंग नहीं है। याहू का ज़िक्र इसकी मुअराज है और यह मखलूक ताकतवर होकर खुदा के सामने बे-पर्दा और हमक्लाम हो जाती है। यह आशिकों का मुकाम है। इसके अतिरिक्त कुछ विशेष को अल्लाह की तरफ से और मखलूकें भी मिल जाती हैं। जैसे तिफ़ले नूरी या जुस्सा-ए-तौफ़ीक इलाही। फिर इनका रुतबा समझ से परे है :

लतीफ़ा-ए-अना के ज़रिये दीदार-ए-इलाही स्वप्न में होता है।

जुस्सा-ए-तौफ़ीक के ज़रिये रब्ब का दीदार मराक्के में होता है।

और तिफ़ल-ए-नूरी वालों का दीदार होशो-हवास में होता है।

यह फिर दुनिया में नाइब-अल्लाह कहलाते हैं। चाहे किसी को इबादित व रियाज़त और चाहे किसी को नज़रों से ही मुकाम-ए-महमूद तक पहुंचा दें उनकी नज़रों में :

च मुस्लिम च काफ़र च ज़िन्दा च मुर्दा ॥

सब बराबर होते हैं जैसे कि गौस पाक की एक नज़र से चोर कुतब बन गया था। अबूबकर हवारी या मंगा डाकू भी इन लोगों की नज़रों से पीर बन गए।

इन्सानी शरीर में इन लताइफ़ (शक्तियों) की इयूटियां

लतीफ़ा-ए-अख़फ़ी

इसके ज़रिये इन्सान बोलता है वरना जुबान ठीक होने के बावजूद वह गूँगा है। इन्सानों और हैवानों में अन्तर इन लताइफ़ का है। पैदायश के समय यदि अख़फ़ी किसी कारण शरीर में दाखिल न हो सके तो इसे शरीर में मंगवाना किसी सम्बन्धित नबी की इयूटी थी-फिर गूँगे बोलना शुरू हो जाते हैं।

लतीफ़ा-ए-सिरी

इसके ज़रिये इन्सान देखता है। इसके शरीर में न आने से इन्सान पैदाइशी अन्धा है। इसे वापिस लाना भी सम्बन्धित नबी की इयूटी थी। जिससे अन्धे भी देखना शुरू हो जाते हैं।

लतीफ-ए-कलब

इसके शरीर में न होने के कारण इन्सान बिल्कुल जानवरों की तरह ईश्वर से अनभिज्ञ, बे-शौक, बे-कैफ हो जाता है। इसे वापिस दिलवाना भी नबियों का काम था। और उन नबियों के मुअजज़ात करामत की सूरत वलियों को भी अता हुए जिसके ज़रिये फ़ासक़ व फ़ाजर भी रब्ब तक पहुंच गये।

किसी भी नबी या वली के ज़रिये जब किसी सम्बन्धित लतीफ को वापिस किया जाता है तो गुंगे, बहरे और अन्धे भी ठीक हो जाते हैं।

लतीफ़ा-ए-अना

इसके शरीर में न आने से इन्सान पागल कहलाता है चाहे दिमाग की सब नसें काम कर रही हों।

लतीफ़ा-ए-ख़फ़ी

इसके न आने से इन्सान बहरा है। चाहे कानों के सुराख खोल दिए जाएं। शारीरिक त्रुटियों से भी ऐसी दशाएं पैदा हो सकती हैं जो इलाज के काबिल हैं। परन्तु मखलूक के न होने का कोई इलाज नहीं। जब तक किसी नबी या वली की हिमायत प्राप्त न हो।

लतीफ़ा-ए-नफ़स के ज़रिये इन्सान का दिल दुनिया में और **लतीफ़ा-ए-कलब** के ज़रिये इन्सान का रुख अल्लाह की तरफ मुड़ जाता है।

लक्फज 'अल्लाह'

सुरयानी जुबान जो आसमानों पर बोली जाती है। फरिश्ते और रब्ब इसी जुबान से मुखातिब होते हैं। जन्नत में आदम सफ़ी अल्लाह भी यही जुबान बोलते थे। फिर जब आदम सफ़ी अल्लाह और माई हव्वा दुनिया में आये। अरबिस्तान में आबाद हुए। उनकी सन्तान भी यही जुबान बोलती थी। फिर आल के दुनिया में फैलाव के कारण यह जुबान अरबी, फ़ारसी, लातीनी से निकलती हुई अंग्रेजी तक जा पहुंची और अल्लाह को विभिन्न जुबानों में पृथक्-पृथक् पुकारा जाने लगा। आदम अलिया-अलस्लाम के अरब में रहने के कारण सरयानी के बहुत से शब्द अब भी अरबी जुबान में मौजूद हैं। जैसा कि आदम को आदम सफ़ी अल्लाह के नाम से पुकारा जाता था। किसी ने नूहनबी अल्लाह, किसी को अब्राहीम खलील अल्लाह, फिर मूसा क्लीम अल्लाह, ईसा रूह अल्लाह और मुहम्मद अलरसूल अल्लाह पुकारा गया था। सब कलमे सरयानी जुबान में लोह-ए-महफूज पर उन नबियों के आने से पहले ही दर्ज थे। तभी हजूर पाक ने कहा था कि मैं इस दुनिया में आने से पहले भी नबी था।

कई लोगों का विचार है कि शब्द अल्लाह मुसलमानों का रखा हुआ नाम है परन्तु ऐसा नहीं।

हज़रत मुहम्मद अलरसूल अल्लाह के पिता का नाम अब्दुल्ला था जबकि उस समय इस्लाम नहीं था और इस्लाम से पहले भी हरेक नबी के कलमे के साथ अल्लाह पुकारा गया। जब रूहें बनाई गई तो इनकी जुबान पर पहला शब्द अल्लाह ही था और फिर जब रूह आदम के शरीर में दाखिल हुई तो या अल्लाह पढ़कर ही दाखिल हुई थी। बहुत-से मजहब इस रम्ज को हक समझकर अल्लाह के नाम का ज़िक्र करते हैं और बहुत-से शंकाओं और भ्रमों के कारण इससे महसूम हैं।

जो भी नाम रब्ब की तरफ़ इशारा करता है आदरणीय है। यानि अल्लाह की तरफ़ रुख कर देता है परन्तु नामों के प्रभाव से बंट गये। हस्फ़े अब्जद और हस्फ़े तहजी की रू से हरेक शब्द का अक्षर अलग होता है। यह भी एक आसमानी इल्म है और इन अक्षरों का सम्बन्ध कुल मखलूक से है। कई बार ये हिन्दसे सितारों के हिसाब से परस्पर समानता नहीं रखते जिसके कारण इन्सान परेशान रहता है। बहुत-से लोग इस इल्म के माहिरों से सितारों के हिसाब से टेवा बनाकर नाम रखते हैं।

जैसा कि अब्जद (अ, ब, ज, द) (1, 2, 3, 4) के दस बनते हैं। इसी तरह हरेक नाम के अलग अदाद होते हैं। जब अल्लाह के विभिन्न नाम रख दिये गये तो अब्जद के हिसाब से एक-दूसरे से टकराव का कारण बन गये। यदि सब एक ही नाम से रब्ब को पुकारते तो जुदा जुदा मजहब होने के बावजूद अन्दर से एक ही होते हैं। फिर नानक साहिब और बाबा फ़रीद की तरह यही कहते सब रूहें अल्लाह के नूर से बनी हैं परन्तु इनका माहौल और उनके महले पृथक् हैं।

बूर बनाने का तरीका

पुराने जमाने में पत्थरों की रगड़ से आग प्राप्त की जाती थी जबकि लोहे की रगड़ से भी चिंगारी उठती थी। पानी पानी से टकराया तो बिजली बन गई। इस प्रकार इन्सान के अन्दर खून के टकराव यानि दिल की टक-टक से भी बिजली बनती है। प्रत्येक इन्सान के शरीर में डेढ़ वाल्ट बिजली होती है जिसके ज़रिये इसमें फुर्ती होती है। बुढ़ापे में टिक-टिक की रफ्तार सुस्त होने के कारण बिजली में भी और चुस्ती में भी कमी आ जाती है। सब से पहले दिल की धड़कनों को नुमाया करना पड़ता है। कोई डांस के ज़रिये कोई कबड्डी या व्यायाम के ज़रिये, कोई अल्लाह अल्लाह की ज़रबों के ज़रिये यह क्रिया करते हैं।

जब दिल की धड़कन में तेज़ी आ जाती है, फिर हर धड़कन के साथ अल्लाह अल्लाह या एक के साथ अल्लाह और दूसरी के साथ हूँ मिलाएं। कभी-कभी दिल पर हाथ रखें धड़कनें महसूस हों तो अल्लाह मिलाएं। कभी-कभी नज्ज की रफ्तार के साथ अल्लाह मिलाएं। ख्याल करें कि अल्लाह दिल में जा रहा है। अल्लाह हूँ का ज़िक्र बेहतर और असरदायक है। अगर किसी को हूँ पर एतराज़ या डर हो तो वह बजाय महरूमी के धड़कनों के साथ अल्लाह अल्लाह ही मिलाता रहे। वृद्ध आदि लोग जितना भी पाक साफ रहे उनके लिए अच्छा है।

कि बे-अद्व बे-मुराद बा-अद्व बा-मुराद

पहला तरीका

कागज पर काली पैसिल से अल्लाह (ﷻ) लिखें जितनी देर तबीयत साथ दे रोज़ाना अभ्यास करें। एक दिन शब्द अल्लाह (ﷻ) कागजों से आंखों में तैरना शुरू हो जाएगा फिर आंखों से तसव्वर के ज़रिये दिल में उतारने की कोशिश करें।

दूसरा तरीका

जीरो के सफेद बल्ब पर पीले रंग से अल्लाह (ﷻ) लिखें उसे सोने से पहले या जागते समय आंखों में समाने की कोशिश करें जब आंखों में आ जाए तो फिर उस शब्द को दिल पर उतारें।

तीसरा तरीका

यह तरीका उन लोगों के लिए है जिनके मार्गदर्शक कामिल हैं और तुअल्लक और निसबत की वजह से रुहानी सहायता करते हैं। एकान्त में बैठ कर शहादत की उँगली को कलम ख्याल करें और तस्सवर से दिल पर अल्लाह (ﷺ) लिखने की कोशिश करें। राहबर को पुकारें कि वह भी तुम्हारी उँगली पकड़ कर तुम्हारे दिल पर अल्लाह (ﷺ) लिख रहा है। यह अभ्यास प्रतिदिन करें जब तक दिल पर अल्लाह (ﷺ) लिखा नज़र न आए।

पहले तरीकों से अल्लाह वैसे नक्शा होता है जैसे कि बाहर देखा या लिखा जाता है फिर जब धड़कनों से अल्लाह मिलना शुरू हो जाता है तो फिर अहिस्ता-अहिस्ता चमकना शुरू हो जाता है क्योंकि इस तरीके में कामिल रहबर का साथ होता है इसलिए शुरू से ही खुशख़त और चमकता हुआ दिल पर अल्लाह लिखा नज़र आएगा।

दुनिया में कई नबी, वली आए ज़िक्र के दौरान बतौर आज़माइश बारी-बारी अगर उचित समझें तो सब का तस्सवर करें जिसके तस्सवर से ज़िक्र में तेज़ी नज़र आये आप का भाग्य उसी के पास है। फिर तस्सवर के लिए उसी को चुन लें। क्योंकि हरेक वली का क़दम किसी-न-किसी नबी के क़दम पर होता है बेशक नबी ज़ाहरी हैयात में न हो।

और हर मोमन का नसीब किसी-न-किसी वली के पास होता है। वली की ज़ाहरी हैयात शर्त है लेकिन कभी-कभी किसी को भाग्यवश किसी कामिल ज़ात से भी फ़ैज़ हो जाता है परन्तु ऐसा बहुत ही सीमित है परन्तु ममात वाले दरबारों से दुनियावी फ़ैज़ पहुंचा सकते हैं। इसे अवेसी फ़ियाज़ कहते हैं। ये लोग प्रायः कशफ़ और ख्वाब में उलझ जाते हैं। क्योंकि मुर्शिद की बातन में और अब्लीस की बातन में। दोनों की पहचान मुश्किल हो जाती है।

फ़ैज़ के साथ इल्म भी ज़रूरी होता है जिसके लिए ज़ाहरी मुर्शिद अधिक उचित है। अगर फ़ैज़ है, इल्म नहीं तो उसे मज़जूब कहते हैं। फ़ैज़ मीहैइल्म भी है उसे महिबूब कहते हैं। महिबूब इल्म के ज़रिये लोगों को दुनियावी फ़ैज़ के इलावा रुहानी फ़ैज़ भी पहुंचाते हैं जबकि मज़जूब डंडों और गालियों से दुनियावी फ़ैज़ पहुंचाते हैं।

बाबत मराक्खा

बहुत-से लोग रूहों (लताइफ़, शक्तियों) की बेदारी और रूहानी ताकत सीखे बगैर मराक्खा करने की कोशिश करते हैं, उनका मराक्खा या तो लगता ही नहीं या शैतानी वारदातें शुरू हो जाती हैं। मराक्खा इन्तहाई लोगों का काम है जिनके नफ़स पाक और कलब साफ़ हो चुके हैं। साधारण लोगों का मराक्खा नादानी है चाहे किसी भी प्रत्यक्ष इबादित से क्यों न हो। रूहों की ताकत को नूर से मिला कर के किसी मुकाम पर पहुंच जाने का नाम मराक्खा है।

विलायत नबूत का चालीसवां हिस्सा है

नबी का हर ख्वाब मराक्खा या अल्हाम वही सही होता है इसे तस्दीक की ज़रूरत नहीं परन्तु वली के 100 में से 40 ख्वाब मराक्खे या अल्हाम सही और बाकी गलत होते हैं और इनकी तस्दीक के लिए इल्म-ए-बातन की ज़रूरत है कि

बे-इल्म नत्वां खुदारा शनाख्त

सब से छोटा मराक्खा कलब की बेदारी के बाद लगता है जो कलब के ज़िक्र के बिना असम्भव है। एक ही झटके में आदमी होशो-हवास में आ जाता है। इस्तख़रे का सम्बन्ध भी कलब (मन) से है।

इससे आगे रूह के ज़रिये मराक्खा लगता है। तीन झटकों से वापिसी होती है। रूह से अखटा लगता है। रूह भी जबरूत तक साथ जाती है जैसा कि जबराइल हज़ूर पाक के साथ जबरूत तक गये थे। ऐसे लोगों को कबरों में भी दफ़ना आते हैं मगर उन्हें खबर नहीं होती। ऐसा मराक्खा असहाब-ए-कैफ़ को लगा था जो तीन सौ (300) साल से ज्यादा समय गुफ़ा में सोते रहे। ऐसा मराक्खा जब गौस पाक को जंगल में लगता था तो वहां के रहने वाले डाकू आप को मुर्दा समझ कर कबर में दफ़नाने के लिए जाते थे लेकिन दफ़नाने से पहले ही वह मराक्खा टूट जाता।

इलिला की तरफ से खास अल्हाम और वही की पहचान

जब इन्सान सीने के मख्लूकों को बादार और मुन्वर करके तजलियात के काबिल हो जाता है तो उस समय अल्लाह उससे हमक्लाम होता है। यूं तो वह कादिरे मुतलक है किसी ज़रिये इन्सान से मुख्तिब हो सकता है, लेकिन उसने अपनी पहचान के लिए एक खास तरीका बनाया हुआ है ताकि उसके दोस्त शैतान के धोखे से बच सकें।

सब से पहले सरयानी जुबान में इबारत सालिक के दिल पर आती है और उसका अनुवाद भी उसी जुबान में नज़र आता है जिसका वह हामिल है। वह तहरीर सफेद और चमकदार होती है और आंखें स्वयं बन्द होकर उसे देखती हैं फिर वह तहरीर कलब से होती हुई लतीफा-ए-मिरी की तरफ जाती है जिसकी वजह से ज़्यादा चमकना शुरू कर देती है। फिर वह तहरीर लतीफा-ए-अख़फ़ी की तरफ आती है। अख़फ़ी से और चमक हासिल करके जुबान पर चली जाती है और जुबान से अपने आप वह तहरीर पढ़ना शुरू कर देती है।

यदि यह अल्हाम शैतान की तरफ से हो तो मन्त्रवर दिल उस तहरीर को मद्दम कर देता है। अगर तहरीर शक्तिशाली हो तो लतीफ-ए-सिटी या अख़फ़ी उस तहरीर को समाप्त कर देते हैं। यदि लतीफों की कमज़ोरी के कारण यह तहरीर जुबान पर पहुँच भी जाए तो जुबान इसे बोलने से रोक लेती है। यह अल्हाम खास वलियों के लिए होता है जबकि साधारण वलियों को खुदा फरिश्तों या रूहों के ज़रिये पैगाम पहुँचाता है।

और जब खास अल्हाम की तहरीर के साथ जबराईल भी आ जाएं तो उसे वही कहते हैं जो सिर्फ नबियों के लिए मखूस है।

बहिश्त (स्वर्ग) किन लोगों के लिए है ?

कुछ अज़ली जहन्ममी भी अम्लों और तपस्या से बहिश्ती बनने की कोशिश करते हैं परन्तु अन्त में शैतान की तरह मरदूद हो जाते हैं क्योंकि बखल, तक्कबर ईर्ष्या इनकी विरसित है।

हदीस-जिस में ज़रा भर भी बखल, ईर्ष्या और घमण्ड है वह जन्नत में नहीं जा सकता।

बहिश्ती लोग यदि बन्दगी में न भी हों तो भी पहचाने जाते हैं। ये लोग दिल के नर्म और साफ़, अकांक्षा और ईर्ष्या से पाक और सखी होते हैं। यदि इबादत में लग जाएं तो बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त कर लेते हैं और ईश्वर उन्हीं की बखशिश के बहाने बनाता है। और कुछ लोग दरम्यान वाले होते हैं। इनका नेकी और बदी का परवाना चलता है और कुछ अल्लाह के खास होते हैं। इन्हीं रूहों ने अज़ल में अल्लाह से मुहब्बत की थी। इन्हें जन्नत दोज़ख से कोई सरोकार नहीं बल्कि अल्लाह के इश्क में तन, मन, धन लुटा देते हैं। अल्लाह के ज़िक्र और रहमत से अपनी रूहों को चमका लेते हैं। दीदार-ए-इलाही भी प्राप्त कर लेते हैं। जन्नत अल-फ़रदोस इन्हीं रूहों के लिए ही आरक्षित है।

इन्हीं के लिए हदीस है कि

कुछ लोग बगैर हिसाब के जन्नत में जाएंगे

जिन को दुनिया का नज़ारा दिखाया (दुनिया इनकी) किस्मत में लिख दी। उन्होंने नीचे दुनिया में आकर दुनिया प्राप्त करने के लिए जान की बाज़ी लगा दी। चोरी, डाका, रिश्वत, सूद जैसे जुर्मों को भी नज़र-अन्दाज़ कर दिया। यहां तक कि वहदानियत का भी इन्कार कर दिया।

उनमें से कुछ रूहें थीं जिन्होंने जन्नत प्राप्त करने के लिए मज़हब या बन्दगी धारण की परन्तु अज़ाजील की निरर्थक प्रमाणित हुई क्योंकि कोई गुस्ताख या अल्लाह का नापसन्द मज़हब या फ़िरका इनके रास्ते में रुकावट बन गया। दूसरी रूहें जिन्होंने बहिश्त की इच्छा की थी उन्होंने दुनियावी कामों के साथ-साथ बन्दगी और तपस्या को प्राथमिकता दी।

हूर और कलूर की लालच में पूजास्थलों की तरफ दौड़ लगाई और जन्नत प्राप्त करने में सफल हो गए। परन्तु इनमें से कुछ लोग पूजा (इबादित) में सुस्त रहे चूंकि जन्नत उनकी किस्मत में थी इसलिए कोई बहाना उनके काम आ गया लेकिन वे जन्नत का वह मुकाम हासिल न कर सके जो नेकों ने हासिल किया। इन्हीं के लिए अल्लाह ने फ़रमाया ‘क्या इन लोगों ने समझ रखा है कि हम उनको नेककारों के बराबर कर देंगे। क्योंकि जन्नत के सात दरवाजे हैं।’

आम लोगों को हिदायत नबियों, किताबों, गुरुओं, वलियों के ज़रिये होती है। उन्हें उस मज़हब में दाखिला और कलमा ज़रूरी है और खास बिना मज़हब और बिना किताबों के भी अल्लाह की रहमत में आ जाते हैं यानि उन्हें हिदायत नूर होती है।

इलिला जिन्हें चाहता है बूद से हिदायत देता है (अल्कुशन)

कहते हैं कि बहिश्त में दाखिले के लिए कलमा ज़रूरी है। बहिश्त में इन शरीरों ने नहीं रुहों ने जाना है और दाखिले के समय पढ़ना है तो फिर ये रुहें मुकाम-ए-दीद में जाकर किसी भी समय कलमा पढ़ लेंगी। मरने के बाद ही सही जैसे हज़ूर पाक को माता, पिता और चाचा की रुहों को मरने के बाद ही कलमा पढ़ाया गया था।

बल्कि खास-उल-खास रुहें ऊपर से ही कलमा पढ़कर यानि इकरार तस्दीक करके आती हैं। हज़ूर ने कहरमाया है कि मैं दुनिया में आने से पहले भी नबी था। ये शब्द रुह के ही रुहों के लिए हो सकते हैं। शरीर तो इस दुनिया में मिला। कौमें हों तब सरदार होते हैं। उम्मती हों तब नबी होते हैं नहीं तो इनका क्या काम ?

फिर इन्हीं लोगों को विभिन्न मज़हबों में भेजा जाता है। कोई बाबा फ़रीद के रूप में, कोई गुरु नानक के रूप में ज़ाहिर होते हैं। अल्लाह को पाने वाली रुहें मज़हब नहीं देखतीं बल्कि जिस की अल्लाह से पहुंच देखती हैं उसके साथ लग जाती हैं। गौस अली शाह जो एक वली हुए हैं तज़करा-ए-गौसिया में लिखा है कि मैंने हिन्दु योगियों से भी फ़ैज़ हासिल किया। यह रम्ज़ न समझ कर मुस्लिम उल्मा ने गौस अली शाह पर वाजिब अल्कत्ल (कत्ल करने योग्य) फ़तवे भी लगाए और मुसलमानों को कहा कि जिस के घर में भी यह किताब हो उसे जला दिया जाए। लेकिन वह किताब बच कर बचाकर अभी भी हिन्दुस्तान, पाकिस्तान में मौजूद और मकबूल है।

कुछ कौमों ने नबियों को तस्लीम किया और कुछ ने नबियों को झुठलाया। झुठलाने वाली कौमों में भी रब्ब ने इन्हें के मज़हब के अनुसार लोगों को भेजा और उन्होंने उन्हें गुनाहों से बचाने के लिए शिक्षा दी और उन्हीं की पूजा (इबादित) और रस्मो-रिवाज के ज़रिये उनका रुख रब्ब की तरफ मोड़ने की कोशिश की। अमन और रब्ब की मुहब्बत का पाठ दिया। यदि ये लोग न होते तो आज हरेक मज़हब एक दूसरे के लिए खूंखार ही बन जाता। ऐसी रुहों को दुनिया में खिज़र (विष्णु महाराज) से भी मार्गदर्शन मिलता है जो हर मज़हब का भेद जानते हैं।

तक्कवी किन लोगों के लिए है

इल्म अलयकीन

ये लोग दुनियादार होते हैं। मुकाम शुनीद (सुनना) होता है। इल्म के जरिये विश्वास रखते हैं। उनका ईमान सुनी सुनाई बातों पर होता है। भटक जाते हैं। इन्हें किस्मत से नहीं बल्कि मेहनत से मिलता है। चाहे रिज़क हलाल से कमाये या हलाल से।

ऐन अलयकीन

ये लोग तारक अलदुनिया कहलाते हुए भी दुनिया वालों के साथ रहते हैं परन्तु उनका रुख और दिल रब्ब की तरफ होता है। इन को प्रायः रहमानी नज़ारे भी दिखाये जाते रहते हैं। इनका मुकाम दीद होती है। इन्हें भी जायज़ मेहनत से मिलता है। नाजायज़ से इन्हें नुकसान होता है।

हक्क-अलयकीन

उनका मुकाम रसीद होता है, यानि अल्लाह की तरफ से कोई रुतबा मिल जाता है और अल्लाह की रहमत की नज़र में आ जाते हैं। इन्हें फ़रिग-अलदुनिया कहते हैं। दुनिया में रहकर भी जायज़ या नाजायज़ धन्धे से दूर रहते हैं। ये यदि जंगलों में भी बैठ जाएं तो अल्लाह उन्हें वहाँ भी रिज़क पहुंचाता है। यह तक्कवे की मंज़िल है। इबतदाई लोग तक्कवे की बात ज़रूर करते हैं मगर उसमें कामयाब नहीं होते।

तकदीर

तकदीर दो तरह की होती है

- 1. अज्ञल 2. मुअल्लक

कुछ लोग कहते हैं जब तकदीर में रिज़क लिख दिया तो इसके लिए धूमना फिरना क्या ? मख्दूम जहानियां ने कहा कि रिज़क को हासिल करने के लिए धूमना फिरना भी तकदीर में लिख दिया ।

मिसाल के तौर पर जैसा कि आप के लिए फूलों का गुलदस्ता छत पर रख दिया गया हो । (यह तकदीरें अज्ञल हैं) इसे प्राप्त करने के लिए आप को सीढ़ियों द्वारा छत पर पहुंचना है (यह तकदीर-ए-मुअल्लक है) जो आप के अख्यत्यार में है और इसी मुअल्लक का हिसाब-किताब होगा न कि तकदीर-ए-अज्ञल का । आप छत पर पहुंचेंगे और अपना नसीब हासिल कर लेंगे । यदि आपने सुस्ती की और छत तक न पहुंचे तो उससे वंचित हो जाएंगे । दूसरा व्यक्ति जिस की तकदीर में छत पर गुलदस्ता नहीं है वह यदि सीढ़ियों के द्वारा या कठोर परिश्रम से भी छत पर पहुंच जाए तो वह महरूम (वंचित) ही है ।

तीसरी रुहें—जिन्होंने न दुनिया तलब की और न ही जन्त के तलबगार हुई। केवल रब्ब के नज़ारे को ही देखती रहीं। उन्होंने इस दुनिया में आ कर रब्ब की तलाश के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया। कई बादशाहतों को भी छोड़ कर उसको पाने के लिए भूखे प्यासे जंगलों में रहते जहां तक कि सी ने नदियों में कितने साल बैठ कर गुजारे। सफलता के बाद वह वली अल्लाह कहलाए और अल्लाह की तरफ से विभिन्न पदों और विभिन्न ड्यूटियों पर प्रतिस्थापित हुए और दोजखियों के लिए भी दवा और दुआ बन गए कि-

निगाह मरद मोमन से बदल जाती हैं तकदीरें । (इकबाल)

इसलिए अरज़ी रुहों के हर जन्म में मुर्शिद (गुरु) का साक्षी होना अनिवार्य है।
पिछले जन्म या खानदान के ज़माने के मुर्शिद मौजूदा जिसम से मुबर्रा हो जाते हैं।

जैसा कि नबूत भी अब्बल बालज़म मर्सल के आने के बाद मुबर्रा हो जाती है जैसा कि मूसा क्लीम अल्लाह अब्बल वालज़म थे। मूसा क्लीम अल्लाह के बाद जितने भी नबी आये ईसा रुह अल्लाह के आने के बाद उनका दीन भी काल अदम क़रार दिया गया। और ईसा रुह अल्लाह से हज़ूर पाक तक जितने भी नबी आये वे हज़ूर पाक के आने पर सब काल-अदम क़रार दिये गये लेकिन अब्बल वालज़म के दीन का सिलसिला जारी रहा और आज तक जारी है। जिस में आदम सफी अल्ला, इबाहीम खलील अल्लाह, मूसा क्लीम अल्लाह, ईसा रुह अल्लाह और मुहम्मद अलरसूल अल्लाह हैं और हर वली इनके पदचिह्नों पर है। क्योंकि इन्सान के अन्दर सीने की पांचों लताइफ (शक्तियां) का सम्बन्ध रसूलों से है। इस कारण उनकी नबूत और फैज़ रुहानी क्यामत तक रहेगा। जो यह कहते हैं कि बगैर कलमा पढ़े कोई जन्त में नहीं जाएगा इसका भाव किसी एक नबी का कलमा नहीं है बल्कि किसी भी अब्बल वालज़म नबी के दीन और कलमा की तरफ इशारा है तभी हज़ूर पाक ने फ़रमाया भी था कि मैं इन (अब्बलोअलअज़म) की किताबों या दीन को झुठलाने नहीं आया बल्कि इसलाह के लिए आया हूं। यानि किताबों में जो रद्दोबदल हो गया था।

आदम सफी अल्लाह का सिलसिला अब भी जारी है। जो लोग सिर्फ़ कलबी ज़िक्र में हैं रब्ब के नाम पर गिरयाज़ारी और आज़ज़ी रखते हैं। तौबा करते हैं और गुनाहों से बचने की कोशिश करते हैं यही इब्तदाई दीन, इब्तदाई नबूत और इब्तदाई इबादित थी। गौस या हर वली का क़दम किसी नबी के क़दम पर होता है और इनका क़दम आदम सफी अल्लाह के क़दम पर है। मज्जदद अल्फ़ सानी ने कहा था कि मेरा क़दम मूसवी है जबकि कलन्दरों का सिलसिला ईस्वी है। शेख अब्दुल कादिर जिलानी मुहम्मदी मुशरब से सम्बन्ध रखते हैं।

सोच तो ज़रा तू किस आदम की औलाद में से है।

कुछ अल्हामी पुस्तकों में लिखा है कि इस दुनिया में चौदह हजार आदम आ चुके हैं और किसी ने कहा है कि आदम सफी अल्लाह चौदहवें और अन्तिम आदम हैं। इस दुनिया में वाकई बहुत से आदम हुए हैं। जब सफी अल्लाह को मिट्टी से बनाया जा रहा था तो फरिश्तों ने कहा था कि यह भी दुनिया में जाकर दंगा फ़साद करेगा क्योंकि फरिश्ते पहले वाले आदमों के हालात से परिचित थे वरना उन्हें क्या खबर कि अल्लाह क्या बना रहा है और यह जाकर क्या करेगा। लोह महफूज में विभिन्न जुबानें, कलमें, विभिन्न जन्तर-मन्तर, मुख्तलिफ़ अल्लाह के नाम, विभिन्न सूरतें जहां तक कि जादू का अम्ल भी दर्ज है। जो कि मारुत, मारुत दो फरिश्तों ने लोगों को सिखाया था और सज्जा के तौर पर वे दोनों फरिश्ते मिस्र के एक शहर बाबल के कुएँ में उल्टे लटके हुए हैं।

हर आदम को कोई ज़बान सिखाई, फिर उनकी कौम में नबियों को हिदायत के लिए भेजा। तभी कहते हैं कि दुनिया में सवा लाख नबी आये जबकि आदम सफी अल्लाह को आए हुए छः हजार साल हुए हैं। यदि प्रत्येक साल एक नबी आता तो छः हजार ही होते। कुछ समय बाद इन कौमों को इनकी नाफ़रमानी की वजह से तबाह किया जैसा कि आसार-ए-क़दीमा के शहरों के बाद में नमूदार होना, और वहां की लिखी हुई जुबानों को किसी ने भी न समझना और किसी कौम को पानी के ज़रिये गर्क किया और इनमें से नूह तूफान की तरह कुछ अफ़राद को उन खतों में बच भी गए।

अन्त में सफी अल्लाह को उन सब से बेहतर बना कर अरब में भेजा गया और बड़े-बड़े नबी भी इस आदम की औलाद से पैदा हुए। विभिन्न आदमों की विभिन्न जुबानें उनकी बची हुई कौमों में रहीं। जब आखिरी आदम आये तो उनको सरयानी ज़ुबान सिखाई गई। जब आप की सन्तान ने दूर-दूर तक यात्रा की तो पहले वाली कौमों से भी मुलाकात हुई और किसी ने अच्छी जगह या हरियाली देख कर उनके साथ ही रहना आरम्भ कर दिया।

अरब में सरयानी ही बोली जाती थी। फिर यह कौमों के मेल-जोल से अरबी, फ़ारसी, लातीनी, संस्कृत आदि में से होती हुई अंग्रेज़ी से जा मिली। विभिन्न जज़ीरों में विभिन्न आदमों की सन्तान थी। इनमें से एक खानाबदोश भी आदम था जिसकी सन्तान आज भी मौजूद है और जिसके ज़रिये विभिन्न कौमें दरयाप्त हुईं।

समुद्र पार के जज़ीरों वाली कौमें एक दूसरे से बेखबर थीं। इतने दूर दराज समुद्री सफ़र न तो घोड़ों से किया जा सकता था और न ही चप्पू वाली किशियां वहां पहुंचा सकती थीं। कोलम्बस मशीनी समुद्री जहाज बनाने में सफल हुआ जिसके ज़रिये वह पहला व्यक्ति था जो अमेरिका पहुंचा किनारे पर लोगों को देखा जो सुख्ख थे। उसने समझा और कहा शायद इण्डिया (India) आ गया है और वह इण्डियन हैं तभी इस कौम को रैड इण्डियन (Red Indian) कहते हैं जो नार्थ डकोटा (North Dakota) की रियासत

में अब भी मौजूद है। रैड इण्डियन कबीले के सरदार से पूछा कि आप का आदम कौन है? उसने जवाब दिया कि हमारे मज़हब के अनुसार हमारा आदम एशिया है जिसकी बीवी का नाम हव्वा है लेकिन हमारे इतिहास के मुताबिक हमारा आदम जनूबी डकोटा (South Dakota) की एक पहाड़ी से आया था। उस पहाड़ी के चिह्न अब भी मौजूद हैं।

लोग कहते हैं कि अंग्रेज और अमेरिकन ठण्डे मौसम के कारण गोरे हैं लेकिन ऐसा नहीं है। किसी काले आदम की नस्ल भी इन खित्तों में कदीमी मौजूद है। वे आज तक गोरे न हो सके। यही कारण है कि इन्सानों के रंग, हुलिये, मिजाज, दिमाग, जुबानें, खुराक एक दूसरे से भिन्न हैं।

आदम सफी अल्लाह की औलाद का सिलसिला मध्य एशिया तक ही रहा। यह वजह है कि मध्य एशिया वालों के हुलिये एक दूसरे से मिलते हैं। कहते हैं कि आदम सफी अल्लाह (शंकर जी) श्रीलंका में उतरे। फिर वहां से अरब पहुंचे और इसके बाद आप अरब में ही रहे और अरब की धरती में ही आप की कबर मौजूद है। तो फिर श्रीलंका में आपके उतरने और कदमों की निशानदही किस ने की? जो अभी तक महफूज है। इसका मकसद आप से पहले ही वहां कोई कबीला आबाद था।

जो कौमें समाप्त कर दी गई हैं उन पर नबूत और विलायत भी समाप्त हो गई और बाकी लोग उन हस्तियों से महरूम (वंचित) हो कर कुछ अर्सा बाद भटक गए। ज्यों-ज्यों ये खित्ते दरयाप्त होते गये एशिया से वली पहुंचते गए और अपने-अपने मज़हबों की तालीम देते रहे और आज भी इस खित्तों में एशियाई दीन फैल गया है। ईसा यूरोशलम में, मूसा बैत अलमुकुकदस, हजूर पाक मक्का जबकि नूह और इब्राहीम का सम्बन्ध भी अरब से ही था।

कुछ नस्लें अज्ञाबों से तबाह हुईं। कुछ की शक्लें रीछ और बन्दरों की तरह हुईं कुछ रहे सहे लोग डर कर रब्ब की तरफ झुके और कुछ रब्ब को कहार समझ कर उससे मुतन्फर हो गए और किसी भी किस्म के हुक्म की अवहेलना की और कहने लगे कि रब्ब वगैरह कुछ भी नहीं। इन्सान एक कीड़ा है। दोज़ख बहिश्त बनी बनाई बातें हैं। मूसा के ज़माने में भी जो कौम बन्दर बन गई थी उन्होंने यूरोप की राह ली थी उस समय की गर्भ वाली माताओं ने बन्दर या बन्दरिया होने पर भी इन्सान को जन्म दिया था। वह कौम आज भी मौजूद है। वह स्वयं कहते हैं कि हम बन्दर की औलाद में से हैं।

जो कौम रीछ की शक्ल में तबदील हुई उन्होंने अफ्रीका के जंगलों की तरफ रुख किया। उस समय की गर्भवती माताओं के पेट में तो इन्सानी बच्चे थे जिनके बाद में नस्ल को (मम) कहते हैं। शरीर पर लम्बे-लम्बे बाल होते हैं। मादायें ज्यादा होती हैं। इन्सानों को उठाकर भी ले जाती हैं। उन पर मज़हब का रंग नहीं चढ़ता लेकिन आदमीयत की वजह से शर्मगाहों को पत्तों के ज़रिये छुपाया होता है।

किसी और आदम को किसी गलती के कारण एक हज़ार साल सजा मिली थी। इसे सांप की शक्ल में तबदील कर दिया गया था। अब उसकी बच्ची हुई कौम एक खास किस्म के रूप में है। जन्म के हज़ार साल बाद इन्सान भी बन जाती है इसे रुहा कहते हैं। इतिहास में है कि एक दिन सिकन्दर-ए-आजम शिकार के

चीन की शहजादी हूं अपने पति के साथ शिकार को निकले थे लेकिन पति को शेर खा गया। मैं अब अकेली रह गई हूं। सिकन्दर ने कहा मेरे साथ आओ मैं तुम्हें वापिस चीन भिजवा दूँगा। औरत ने कहा पति तो मर गया है मैं अब वापिस जा कर क्या मुँह दिखाऊँगी। सिकन्दर उसे घर ले आया और शादी कर ली।

कुछ महीनों के बाद सिकन्दर के पेट में दर्द शुरू हो गया। हर तरह का इलाज करवाया कोई आराम न हुआ दर्द बढ़ता ही गया। हकीम थक हार गए। एक सपेरा भी सिकन्दर के इलाज के लिए आया। उसने सिकन्दर को अकेले बुलाकर कहा मैं आपका इलाज कर सकता हूं लेकिन मेरी कुछ शर्तें हैं। अगर थोड़े ही दिनों में मेरे इलाज से आराम न आया तो बेशक मुझे कत्ल करवा देना। आज की रात खिचड़ी पकवाओ। नमक ज़रा ज्यादा हो दोनों मियां बीवी पेट भर कर खाओ। कमरे को अन्दर से ताला लगाओ कि दोनों में से कोई बाहर न जा सके। तुम्हें सोना नहीं लेकिन बीवी को ऐसा लगे कि तुम सो रहे हो। पानी की एक बून्द भी अन्दर न हो। सिकन्दर ने ऐसा ही किया। रात को किसी समय बीवी को प्यास लगी देखा पानी का बर्तन खाली है। फिर दरवाज़ा खोलने की कोशिश की, देखा ताला है, फिर पति को देखा महसूस हुआ कि वह बेखबर सो रहा है। फिर सर्पनी बन कर नाली के सुराख से बाहर निकल गई। पानी पिया और फिर सर्पनी की सूरत में दाखिल होकर औरत बन गई।

सिकन्दर-ए-आजम यह सब कुछ देख रहा था। सुबह सपेरे को सब कुछ बताया। उसने कहा तेरी बीवी नागिन है जो हजार साल बाद रूप बदलता है। इसका जहर पेट की दर्द का कारण बना। फिर उस औरत को सैर के बहाने समुद्र में ले गये और जिस जगह फँका वह निशान अब भी मौजूद है। इसे सद सिकन्दरी कहते हैं। इनकी नस्ल भी संसार में मौजूद है। साधारणतया सांपों के कान नहीं होते लेकिन इस नस्ल वाले सांप के कान होते हैं। पता नहीं किस आदम का कबीला चीन के पहाड़ों में बन्द है। उनके इस खिते में दाखिले को रोकने के लिए जो अल्करनीन ने पत्थरों की दीवार बना दी थी। इनके लम्बे-लम्बे कान हैं एक को बिछा लेते हैं दूसरे को ओढ़ लेते हैं। इन्हें जाजूज माजूज कहते हैं। साइंस ने काफ़ी भाग ढूँढ़ लिए हैं लेकिन अभी भी काफ़ी ढूँढ़ने बाकी हैं।

हिमालय के पीछे भी बर्फानी इन्सान मौजूद हैं। बहुत से इन्सान जंगलों में भी मौजूद हैं। उनकी जुबान उनके अतिरिक्त कोई नहीं जानता वे भी अपने आदम के तरीके पर बन्दगी (इबादत) करते हैं और जाब्ता हयात के लिए उनकी भी सरदारी व्यवस्था विद्यमान है। इन महाद्वीपों के अलावा और भी बड़ी ज़मीनें हैं जैसे कि चांद, सूरज, मंगल, बृहस्पति आदि वहां भी आदम आये हैं। लेकिन वह क्यामतें आ चुकी हैं। कहीं ऑक्सीजन को रोक कर और कहीं ज़मीन को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया है।

मंगल (मरीख) में इन्सानी ज़िन्दगी अभी भी मौजूद है जबकि सूर्य में भी रोशनी आलिशी मखलूक आबाद है।

कहते हैं कि एक अन्तरिक्ष यात्री जब चांद पर उतरा, उसने ऊपर के सितारों की तहकीक करनी चाही तो उसे आज्ञान की आवाज भी सुनाई दी। जिससे वह प्रभावित होकर मुसलमान हो गया था। वह मंगल की दुनिया थी जहां हर मज़हब के लोग रहते हैं हमारे साइंसदान अभी मरीख पर पहुँच नहीं पाये हैं जबकि वे

लोग कई बार इस दुनिया में आ चुके हैं और परीक्षण के तौर पर यहां वे इन्सानों को भी अपने साथ ले गये। उनकी साइंस और आविष्कार हम से बहुत आगे हैं। हमारे उपग्रह या साइंसदान यदि वहां पहुंच भी गये तो उनकी गिरफ्त से आज्ञाद नहीं हो सकते।

आदम को अल्लाह ने बहुत इल्म दिया था और उसकी औलाद इल्म के ज़रिये बेत अल्मामूर तक जा पहुंची थी यानि जो हुक्म अल्लाह फ़रिश्तों को देता वे सुन लेते थे। एक दिन फ़रिश्तों ने कहा ऐ अल्लाह यह कौन हमारे कार्यों में हस्तक्षेप करने वाली बन गई है। हम जब भी कोई काम करने के लिए दुनिया में जाते हैं तो यह पहले ही उसका तोड़ कर चुके होते हैं। अल्लाह जब्राइल से कहा जाओ उनकी परीक्षा लो। एक बारह साल का बच्चा बकरियां चरा रहा था जब्राइल ने उससे पूछा कि क्या तुम भी कोई इल्म रखते हो ? उसने कहा, “पूछो”। जब्राइल ने कहा “बताओ इस समय जब्राइल किधर है ? उसने आंखें बन्द कीं और कहा आसमानों पर नहीं है। फिर किधर है ? उसने कहां जमीनों पर भी नहीं है। जब्राइल ने कहा फिर किधर है ? उसने आंखें खोल दीं और कहा मैंने चौदह तबकों में देखा वह कहीं भी नहीं है या मैं जब्राइल हूँ या तू जब्राइल है !”

फिर अल्लाह ने फ़रिश्तों को कहा, “इस कौम को सैलाब (बाढ़) के ज़रिये गर्क (दुबोना) किया जाए उन्होंने यह फ़रमान सुन लिया। लोहे और शीशे के मकान बनाने शुरू कर दिये। फिर जलजले (भूकम्प) के ज़रिये और कौम का नष्ट किया गया। उस समय उस भाग को ‘काल्दा’ और अब यूनान बोलते हैं।”

उन्होंने रुहानी इल्म के ज़रिये और अब हमारे साइंसदान, साइंसी इल्म के ज़रिये रब्ब के कार्यों में हस्तक्षेप कर रहे हैं। उन्हें डराने के लिए छोटी मोटी तबाही के लिए एक सितारे को ज़मीन की तरफ भेज दिया गया है जिसका गिरना 20-25 साल तक सम्भावित है और वह दुनिया का आखिरी दिन होगा। उसका एक टुकड़ा पिछले दो वर्षों में मुश्तरी ग्रह पर गिर चुका है। वैज्ञानिकों को भी इसका इल्म हो चुका है और यह उसके गिरने से पहले चांद पर या किसी और ग्रह पर बसना चाहते हैं जबकि चांद पर प्लाटों की बुकिंग भी हो चुकी है। यह जानते हुए भी कि चांद पर जीव के चिह्न यानि हवा पानी और हरियाली नहीं है फिर इस चेष्टा का क्या अर्थ है ? रहा प्रश्न खोज का ?

चांद मुश्तरी पर पहुंचकर भी मानवता का क्या लाभ हुआ ? क्या कोई ऐसी दर्वाई या नुसखा लम्बी आयु या मौत से छुटकारे का मिला ?

अगर मरीख की मखलूकात तक पहुंच भी जाए तो वहां की ऑक्सीजन और यहां की ऑक्सीजन के कारण एक दूसरी जगह रहना मुश्किल है। बस बेकार दौलत का नाश किया जा रहा है। यदि यही दौलत रूस और अमेरिका ग्रीबों पर खर्च कर दे तो सब खुशहाल हो जाएंगे। मानवता के अन्तर के कारण एक दूसरे को तबाह करने के लिए एटम बम बनाये जा रहे हैं जबकि बमों के बगैर भी दुनिया को तबाह ही होना है।

आसमान पर रुह सीमा से अधिक बन गई थीं !

मक्करब रुहें अगली पंक्तियों में थीं। साधारण रुहों को इस दुनिया में बनाये हुए आदमों की कौमों ने भेजा, जो कोई काली, कोई सफेद, कोई पीली, और कोई लाल मिट्टी से बनाये गये थे। उन्हें जब्राइल और हारूत मारूत के माध्यम से इल्म सिखाया गया।

जब ज़मीन पर मिट्टी से आदम बनाये जाते तो खबीस जिन भी मौका देखकर उनके और उनकी सन्तानों के शरीर में दाखिल हो जाते और उन्हें अपनी शैतानी पकड़ में लेने की कोशिश करते। फिर उनकी कौम ने नबी वली और उनकी सिखाई हुई विद्या और उपदेश से उनकी मुक्ति का कारण बनते। अनगिनत आदम जोड़ों के रूप में बनाये गये जिन से औलाद का क्रम जारी हुआ परन्तु कई बार अकेली औरत को बनाया गया और अमर-ए-कुन से उसकी औलाद हुई।

वे कौमें भी इस दुनिया में मौजूद हैं। इस कबीले में केवल औरतें ही सरदार होती हैं स्त्री की औलाद होने रब्ब को भी फ़ीमेल (स्त्री) समझते हैं और स्वयं को फ़रिश्तों की औलाद समझते हैं। क्योंकि उनके स्त्री आदम के पुरुष के बिना ही बच्चे हुए थे। यही प्रथा उनमें अब भी चली आ रही है। इन कबीलों में पहले औरत के किसी से भी बच्चे हो जाते हैं और बाद में किसी से भी शादी हो जाती है और वे इसे बुरा नहीं समझते।

रुहों के इकरार, किस्मत और पदों की वजह से जैसे आदम बनाकर उन्हीं जैसी रुहों को नीचे भेजा गया। यही कारण है कि उनके लिए विशेष दीन नहीं बनाया गया। यदि इन में नबी भी आये तो बहुत कम उन्हें स्वीकार किया। बल्कि नबियों की शिक्षा का उल्ट किया। अल्लाह को पूजने की जगह चांद, सितारों, वृक्षों, आग जहां तक सांपों को भी पूजना शुरू कर दिया।

अन्त में आदम सफी अल्लाह को जन्नत की मिट्टी से जन्नत में ही बनाया गया ताकि मान प्रतिष्ठा में सब से श्रेष्ठ हो जाए और खबीसों से भी सुरक्षित रहे क्योंकि जन्नत में खबीसों की पहुंच नहीं है। अज़ाज़ील अपने इल्म से पहचान गया था जो बन्दगी की वजह से सब फ़रिश्तों का सरदार बन गया था और जिनों की कौम से था; उसने आदम के शरीर पर ईर्ष्या से थूका था और थूक के ज़रिये खबीसों जैसा कीटाणु उसके शरीर में प्रविष्ट हुआ। जिसे नफ़स कहते हैं और वह भी आदम की सन्तान में विरसे में आ गया। इसी के लिए हज़ूर ने फ़रमाया, “जब इन्सान पैदा होता है तो एक शैतान जिन भी उसके साथ पैदा होता है।”

फ़रिश्तों और म्लाइका में अन्तर—मलकूत में फ़रिश्ते होते हैं जो रुहों के साथ ही अस्तित्व में आये। मलकूत से ऊपर जबरूत की मखलूक को म्लाइका कहते हैं।

जो रुहों के अमर-ए-कुन से पहले के हैं रब्ब की तरफ से इन्हें आदम सफी अल्लाह को सिजदा की आज्ञा हुई जब कि इस से पहले न कोई आदम बहिश्त में बनाया गया था और न ही किसी आदम को फ़रिश्तों ने सिजदा किया था। अज़ाज़ील ने हील हुज्जत की और सिजदा करने से इन्कारी हुआ तो उस पर लानत

पड़ी तो उसने सफ़ी अल्लाह की सन्तान से शत्रुता करनी शुरू कर दी। जबकि पहले आदमों की कौमें इसकी शत्रुता से सुरक्षित थीं उसको बहकाने के लिए खबीस जिन ही काफ़ी थे।

चूंकि शैतान सभी खबीसों से अधिक शक्तिशाली था। इसने सफ़ी अल्लाह की औलाद को ऐसे काबू किया और ऐसे जुर्म सिखाये जिसकी वजह से दूसरी कौमें इन एशियाइयों से घृणा करने लगीं और अज़मत-ए आदम की ही वजह से जिन लोगों को रब्ब की तरफ हिदायत मिली इतने खुदाप्रस्त और अज़मत वाले हो गये कि दूसरी कौमें हैरत करने लगीं। सब से बड़ी आसमानी किताबें तब्वरियत, ज़बूर, अंजील और कुरान इन्हीं पर नाज़ल हुईं जिनकी शिक्षा फ़ेज़ और बरकत से एशियाई दीन पूरी कौमों में फैल गया।

आदम की अभी रूह भी नहीं डाली गई फरिश्ते समझ गये थे कि इसे भी दुनिया के लिए बनाया जा रहा है, क्योंकि मिट्टी के इन्सान ज़मीन पर ही होते हैं। फिर किसी बहाने ज़मीन पर भेज दिया गया। अज़ली कम अल्लाह की तरफ से होते हैं और दोष इन्सानों पर लग जाते हैं। अगर आदम को बगैर अल्जाम के दुनिया में भेजा जाता हो तो वे दुनिया में आकर शिकवे शिकायत ही करते हैं। तौबा ताइब और गिड़ग़ड़ाहट क्यों करते?

तस्विक में अहमियत कलब को है

किसी ने जरबों, किसी ने कबड्डी, किसी ने नृत्य, किसी ने दीवारें बनाई किसी ने तोड़ दीं और किसी ने वर्जिश (व्यायाम) के माध्यम से दिल की धड़कनों को उभारा और फिर इसके साथ अल्लाह अल्लाह मिलाने में आसानी हो गई, और अल्लाह अल्लाह सब लताइफ तक खुद पहुंच गया और कुछ लोग गहराई में जाए बगैर उनकी नकल करने लगे। उन्होंने भी अल्लाह अल्लाह के साथ नृत्य शुरू कर दिया। धड़कनों के साथ अल्लाह अल्लाह तोन समझ और मिला सके परन्तु उनकी हैवान रूह, जिसका सम्बन्ध उछल कूद से है, अल्लाह के नाम से मानूल हो गई। इस तरह संगीत के साथ-साथ अल्लाह-अल्लाह मिलाने से रूह-ए-नबाती भी मानूस और ताकतवर होती है। संगीत रूह-ए-नबाती का भोजन है।

अमेरिका में संगीत द्वारा कुछ फ़सलों पर प्रयोग किया गया। एक ही जैसी फ़सल एक ही जैसी जमीन पर उगाई गई। एक में दिन रात संगीत और दूसरी को खामोश रखा गया। संगीत वाली फ़सल दूसरी से हर प्रकार से बहुत बढ़िया हुई।

नफ़स बहुत मूजी है पाक होने के बाद भी बहानेबाज है जबकि उसकी पसन्द साज और आवाज है। कुछ लोगों ने साज के जरिये नफ़स को अपनी ओर आकर्षित करके उसका रुख अल्लाह की तरफ़ मोड़ने का यत्न किया। कुछ लोगों ने गिटार के साथ अल्लाह अल्लाह मिलाया और न सही कम-से-कम कान की बन्दगी तक पहुंच गये। मुझे एक गिटार वाले ने किस्सा सुनाया था कि मैं शोकिया खाली समय में गिटार की तार के साथ अल्लाह-अल्लाह मिलाता रहता हूँ कभी-कभी जब नींद से उठता हूँ तो मेरे अन्दर उसी तरह अल्लाह-अल्लाह की आवाज आ रही होती हैं। ऐसे लोग दूसरी रुचियों यानि गाने-बजाने वालों और दर्शकों से अच्छे हो गये परन्तु कि वलाइत के उपाधि तक न पहुंचे। यह लगन, तड़प और तलाश वाले लोग होते हैं। और किसी कामिल (पूर्ण पहुंचा हुआ) के माध्यम से अपनी मंजिल तक पहुंच जाते हैं।

इस्लाम में भी और दूसरे मजहबों के सूफियों ने भी किसी-न-किसी तरीके से रब्ब के नाम को अपने अन्दर ज़ज़ब करने की कोशिश की। जो कार्य रब्ब की तरफ़ मोड़े और उसके इश्क में वृद्धि करे वह नाजायज नहीं है।

हदीस—अल्लाह अम्लों को नहीं बल्कि नीयतों को देखता है। शरीयत वाले इस मअयूब और गलत समझते हैं क्योंकि वे शरीअत से ही सन्तुष्ट और सैराब हो जाते हैं परन्तु वे लोग जो शरीअत से आगे इश्क की तरफ़ बढ़ना चाहते हैं या वे लोग जो शरीअत में नहीं हैं उन्हें कुछ और पर्याय करने से क्यों रोका जाता है ?

दीन-ए-इलाही

इशक-ए-इल्लाह वसाल-ए-इल्लाही

यह पहले खास तक था अब रुहानियत के जरिये साधारण तक भी पहुंच गया है।

हदीस—हज़रत अब हरीरा मुझे हुजूर पाक से दो इल्म हासिल हुए एक तुम्हें बता दिया दूसरा बताऊँ तो तुम मुझे कत्ल कर दो।

जब पानी के हौज से खुशक किताबें निकलीं तो
 मौलाना रूम ने कहा, 'ईचीस्त ? शाह शम्मस ने कहा,
 'ई आँ इल्म अस्त कि तवनमी दानी ।
 जब मूसा ने कहा कि क्या कुछ और इल्म भी है ?
 तो अल्लाह ने कहा, खिजर के पास चला जा
 बर नमाजी की दुआ

ऐ अल्लाह ! मुझे उन लोगों का सीधा रास्ता दिखा जिन पर तेरा इनाम हो ।

अलामा इकबाल
 उसको क्या जाने बेचार दूर कअत के इमाम

*

वे रुहें जो अज़ल से बा-मरतबा हैं । अल्लाह जिन से प्यार करता है दुनिया में आकर भी रब्ब का नाम लेने वाली हुई । जैसे ईसा ज़चगी में ही बोल उठे थे कि मैं नबी हूँ । जबकि हज़रत मरियम को पैदाइश से पहले जब्राइल बुशारत दे चुका था । मूसा के बारे में फ़रऊन की भविष्य वाणी थी कि फ़लां कबाले से बच्चा पैदा होगा जो तुम्हारी तबाही का कारण बनेगा । और अल्लाह का खास बन्दा होगा । हुजूर पाक ने भी कहा था मैं दुनिया में आने से पहले भी नबी था ।

बहुत-सी मुहब्बत और अज़ली रूहें विभिन्न मज़हबों और विभिन्न शरीरों में मौजूद हैं।

आखरी ज़माना में अल्लाह किसी एक रूह को दुनिया में भेजेगा जो इन रूहों को ढूँढ कर इकट्ठा करेगा और इन्हें याद दिलायेगा कि कभी तुम ने अल्लाह से मुहब्बत की थी। ऐसी सब रूहें चाहे वे मज़हबी या बेमज़हबी शरीरों में थीं उसकी आवाज पर जी आयां कहेंगी और उसके गिर्द एकत्रित हो जाएंगी।

वह रब्ब का खास नाम उन रूहों को देगा जो कलब से होता हुआ रूह तक पहुंचेगा और फिर रूह उस नाम का वर्णन करने वाली (जाकर) बन जाएगी। वह नाम रूह को नया उत्साह, नई शक्ति और नई मुहब्बत बख्शेगा। उसके नूर से रूह का सम्बन्ध दोबारा अल्लाह से जुड़ जाएगा।

ज़िक्र कलब ज़िक्र-ए-रूह का वसीला है—जैसा कि बन्दगी यानि, नमाज, रोज़ा ज़िक्र-ए-कलब का वसीला है अगर किसी की रूह अल्लाह के ज़िक्र में लग गई तो वह उन लोगों से है जिन्हें तारजू, महशर के दिन का भी भय नहीं। रूह के आगे ज़िक्र और इबादित उसके बुलन्द मरतबे के, साक्षी हैं।

जिन लोगों की मंज़िल कलब से रूह की ओर गामज़न है वही दीन-ए-इलाही पहुंच चुके हैं या पहुंचने वाले हैं। उन्हें किताबों से नहीं बल्कि नूर से हिदायत है और नूर से गुनाहों से परे हो जाते हैं। और जो सुनकर और परिश्रम से भी इस मुकाम से वंचित हैं वे इस सिलसिले में शामिल नहीं हैं। अगर ज़िक्र-ए-रूह कलब के बगैर खुद को इस सिलसिले में मत्स्यवर किया या उनकी नकल की तो वे ज़न्दीक हैं।

जबकि आम लोगों की बख्शिश का माध्यम इबादत और मज़हब है।

हिदायत का माध्यम आसमानी किताब है

शफ़ायत का माध्यम नबूत और वलाइत है।

बहुत से मुस्लिम वलियों की शफ़ायत को नहीं मानते लेकिन हज़ूर ने असहाबा को ताकीद की थी कि अव्वाली करनी से उम्मत के लिए बख्शिश की दुआ करना।

रुहों का दीन

इश्क-ए-इलाही व दीन-ए-इलाही वालों की पहचान

जिसमें सब दरिया लीन हो जाएं वह समुद्र कहलाता है और जिसमें सब दीन लीन होकर एक हो जाएं वही इश्क इलाही और दीन इलाही है।

जित्थे चारों मज़हब आ मिले हू (सुल्तान साहिब)

प्रारम्भिक पहचान

जब क़लब और ज़िक्र जारी हो जाए चाहे इबादत से हो चाहे किसी कामिल की नज़र से हो दोनों अवस्थाओं में वह अज़ली है। गुनाहों से नफरत होनी शुरू हो जाएगी। यदि गुनाह हो भी जाए तो उस पर अफसोस और शर्मिन्दगी हो और उस से बचने के ढंग सोचे।

मुझे वे लोग भी पसन्द हैं जो गुनाहों से बचने की विधियां सोचते हैं। (अल्कुरान)

दुनिया की मुहब्बत दिल से निकलना और अल्लाह की मुहब्बत वर्चस्व आरम्भ हो जाए, आकांक्षा, ईर्ष्या, घमण्ड से छुटकारा महसूस हो जुबान किसी की निन्दा चुगली से बाज़ आ जाए। विनम्रता महसूस हो कंजूसी की जगह सखावत तथा झूठ जाता नज़र आये। हराम ख्वाहशात नफसानी हलाल में तबदील हो जाए। हराम माल, हराम खाने और हराम कामों से नफरत पैदा हो।

इंतहाई पहचान

चरस, अफीम, हिरोइन, तम्बाकू, शराब आदि से बिल्कुल छुटकारा हो जाए। पवित्र हस्तियों से स्वप्न या अनूदगी के माध्यम से मुलाकाती हो जाए। नफस अमाराह से सन्तुष्ट बन जाए। लतीफा-ए-अना के सामने अल्लाह और बन्दे के दरम्यान सब पाबन्दियां उठ जाएं, बाज़-ए-गुनाह, इश्क-ए-खुदा, वस्ल खुदा बन्दे से बन्दा नवाज़ और गरीब से गरीब नवाज़ बन जाए।

क्योंकि इस सिलसिले में विभिन्न मज़हबों से आकर रुहें शामिल होंगी जिन्होंने रोज़-ए-अज़ल में रब्ब की गवाही में कलमा पढ़वा लिया था। इसलिए किसी भी मज़हब की कैद नहीं होगी। हरेक व्यक्ति अपने मज़हब की इबादत कर सकेगा। लेकिन क़लब ज़िक्र सभी का एक ही होगा यानि विभिन्न मज़हबों के बावजूद दिलों से सब एक हो जाएंगे। फिर जब दिलों में अल्लाह आया तो सब अल्लाह वाले हो जाएंगे। इसके बाद रब्ब की मर्जी है कि उन्हें अपने पास रखे या किसी भी मज़हब में हिदायत के साथ भेज दे यानि कोई मुफीद होगा कोई मुन्फद, कोई सिपाही होगा और कोई कमाण्डर होगा।

इन की सहायता और साथ देने वाले गुनाहगार भी किसी न किसी मरतबे पर पहुंच जाएंगे। जो लोग इस टोली में शामिल न हो सके उनमें से प्रायः शैतान के साथ मिल जाएंगे। चाहे वे मुस्लिम हों या गैर-मुस्लिम हों अन्त में इन दोनों टोलियों में भयंकर युद्ध होगा। ईसा महदी, काल्की अवतार वाले मिलकर इन्हें पराजित

कर देंगे। बहुत से दजालिये (शैतान के साथी) कत्तल कर दिये जाएंगे जो बचेंगे वे भय और मज़बूरी की वजह से खामोश रहेंगे।

महदी और ईसा का लोगों के दिलों पर अधिकार हो जाएगा। पूरी दुनिया में शान्ति स्थापित हो जाएगी। जुदा जुदा मज़हब समाप्त हो कर एक ही मज़हब में परिवर्तित हो जाएंगे। वह मज़हब रब्ब का पसन्दीदा, तमाम नबियों के मज़हबों और किताबों का निचोड़, सारी मानवता के लिए सर्वमान्य, सभी इबादतों से श्रेष्ठ जहाँ तक कि अल्लाह की मुहब्बत से अफ़ज़ल इश्क इलाही होगा।

जित्थे इश्क पहुंचा ओह ईमान नूं वी खबर नहीं (बाहु)

अलामा इकबाल ने उसी वक्त के लिए नक्शा खींचा है

दुनिया को है महदी-बर हक्क की ज़रूरत
हो जिसकी नज़र ज़लज़ला-ए-आलम उफ़कार
खुले जाते हैं असरारे नहानी गया दौर हदीस लनतरानी
हुई जिसकी खुदी पहले नमूदार वही महदी वही आखिर ज़मानी
खोलकर आंख मेरी आइना-ए-अवराक में
आने वाले दौर की धुन्धली सी इक तस्वीर देख
लोलाक लमा देख ज़मीं देख फ़िजा देख
मशरिक से उभरते हुए सूरज को ज़रा देख
गुज़र गया अब वो दौर साक़ी कि छुप के पीते थे पीने वाले
बनेगा सारा जहाँ मथखाना हर एक ही बादा ख्वार होगा
ज़माना आया है बे हजाबी का आम दीदारे यार होगा
सकूत था परदादार जिसका वो राज अब आश्कार होगा
निकल के सहरा से जिसने रोमा की सल्तनत को पलट दिया था
सुना है कुदसियों से मैंने वो शेर फ़िर होश्यार होगा।

“यह किताब हर मज़हब हर जाति और प्रत्येक आदमी के लिये विचार और अन्वेषण के योग्य है। अध्यात्मवाद से विमुख लोगों के लिए चुनौती है।”

फ़रमादात गौहर शाही

तीन हिस्से इलमे ज़ाहिर के हैं और एक हिस्सा इलमे बातन (अन्दरूनी) का है। ज़ाहरी इलम हासिल करने के लिए मूसा और बातनी इलम के लिए किसी खिज़र की तलाश करनी पड़ती है।

जब्राइल के बगैर जो आवाज़ आई, उसे अल्हाम और जो इलम आया उसे सहीफे या हदीस-ए-कुदसी कहते हैं और जब्राइल के साथ जो इलम आया उसे कुरान कहते हैं चाहे वह जाहरी इलम हो या बातनी इलम हो।

उसे तोरीत कहें ज़बूर कहें या अंजील कहें।

उल्मा से अगर कोई गलती हो जाए तो उसे स्यासत कह कर छुटकारा हासिल कर लेते हैं। औलिया से कोई गलती हो जाए उसे हिक्मत समझ कर नज़र-अन्दाज़ कर देते हैं।

जब कि नबियों की दफा नहीं लगती।

जो जो शुगल में है अन्दर से उनकी सम्बन्धित रूहें ताकतवर हैं और जो किसी भी शुगल में नहीं हैं उनकी रूहें खफता और बे-हस्स हैं। और जिन्होंने किसी भी तरीके से अल्लाह का नाम इन रूहों में बसा लिया फिर उनका शुगल हर समय ज़िक्र सुल्तानी और इश्क खदावन्दी है।

तभी अलामा इकबाल ने कहा-

अगर हो इश्क तो कुफर भी मुसलमानी है

सचल साई ने कहा-

बिन इश्क दिलबर के सचल क्या कुफर है क्या इस्लाम है।

सुल्तान बाबर ने कहा-

जित्थे इश्क पहुंचावे ईमान नूँ वी खबर न काई

ऐसे लोग जब किसी मज़हब में होते हैं या जाते हैं तो उनकी बरकत से उस जगह पर अल्लाह की बारान-ए-रहमत बरसना शुरू हो जाती है।

फिर वो बाबा फ़रीद हो तो हिन्दु सिक्ख भी उनकी चौखट पर अगर बाबा गुरु नानक हो तो मुस्लिम इसाई भी उनके दर पर चले जाते हैं।

(इमाम महदी सभी मज़हबों की तजदीद करेंगे)

जिस तरह हज़ूर पाक की खत्म-ए-नबूत के बाद मुस्लिम में मुज्जदद आते रहे और माहौल के मुताबिक दीन में कुछ तजदीद करते रहे इसी तरह इमाम महदा अलिया अल्सलाम के आने के बाद उन मुज्जददों की तजदीद खत्म हो जाएगी और सब मज़हबों के अनुसार इमाम महदी की अपनी तजदीद होगी। कुछ किताबों में है। वे एक नया दीन बनाएंगे।

फ़रमवादात गौहरशाही

अगर कोई सारी उमर इबादत करता रहे लेकिन आखिर में इमाम महदी और हज़रत ईसा का विरोध कर बैठा, जिनको दुनिया में दोबारा आना है। ईसा का जिस्म समेत और महदी का अर्जी रूहों के ज़रिये आना है।

तो वह ब्लीअम बाउर की तरह दोज़खी तो अब्लीस की तरह मरदूद है।

अगर कोई सारी उमर कुत्तों जैसी ज़िन्दगी बसर करता रहा और आखिर में उनका साथ और उन से मुहब्बत कर बैठा तो वह कुत्ते से हज़रत कत्मीर बन कर जन्त में जाएगा।'

कुछ जातियां और मजहब कहते हैं कि ईसा मर गये हैं। अफगानिस्तान में उनका मजार है। यह गल्त प्रापेण्डा है। अफगानिस्तान में किसी और ईसा नामक बुजुर्ग का दरबार है। उस प्यादा ज़माने (जिस समय पैदल यात्रा करते थे) महीनों का सफर करके दफनाना क्या मक्कद रखता है? फिर वे कहते हैं आसमान पर कैसे उठाये गये? हम कहते हैं आदम अलिया अल्सलाम आसमान से कैसे लाये गये। जबकि अदरीस भी जाहरी शरीर से बहिश्त में अब तक मौजूद हैं। खिजर और इल्यास जो दुनिया में हैं उनको भी अभी तक मौत नहीं आई। गौस पाक के पोते हयात अलामीर 600 साल से जिन्दा है। गौस पाक ने कहा था उस वक्त तक नहीं मरना जब तक मेरा इस्लाम महदी अलिया अलसलाम को न पहुंचा दो। शाह लतीफ को बरी इमाम की उपाधि उन्होंने ही दी थी। मरी की तरफ बारह कोह में उनका बैठक के निशान अभी तक सुरक्षित हैं।

जाहरी गुनाह की सजा जेल, जुर्माना या एक दिन की फांसी है। अगर कोई राहे फ़िक्र में है तो उसकी सजा मलामत है जबकि बातनी गुनाहों की सजा बहुत ज्यादा है। गैबत करने वाले की नेकियों से जुर्माना फरीक दोयम की नेकियों में शमिल किया जाता है, आकांक्षा, ईर्ष्या, घमण्ड आदि उसकी लिखी हुई नेकियों को मिटा देते हैं। अगर उसमें कुछ नूर है तो अम्बीया-ए-व औलिया की गुस्ताख बग़ज़ से छिन जाता है जैसा कि शेख सनआन का शेख अब्दुल कादिर जेलानी की गुस्ताखी से कशफ व करामात का सल्ब हो जाना।

घटना है कि जब बाजीद बस्तानी को पता चला कि एक शख्स उनकी बुराई करता है तो आपने उसका वज़ीफा निश्चित कर दिया वह वज़ीफा भी लेता रहा और बुराई भी करता रहा। एक दिन उसकी बीबी ने कहा नमक हरामी छोड़ो या वज़ीफा छोड़ो या बुराई छोड़ो। फिर उसने तारीफ करनी शुरू कर दी। आप को जब तारीफ (प्रशंसा) का पता चला तो वज़ीफा बन्द कर दिया। फिर वह आप की खिदमत में हाज़िर हुआ कि जब बुराई करता था, वज़ीफा मिलता था। अब तारीफ की वजह से वज़ीफा क्यों बन्द हुआ? आपने फ़रमाया “तू उस वक्त मेरा मजदूर था तेरी बुराई से मेरे गुनाह जतात मैं उसका तुझे मुआवज़ा देता था अब किस चीज़ का मुआवज़ा दूँ। मुन्दरजा बुराईयों का सम्बन्ध नफ़स इमारा से है जिसका सहायक अब्लीस है जब कि तक्वी, सखावत, दर-गुज़र, सबर और शुक्र, आजिज़ी और अन्वारे इलाही का सम्बन्ध कलबे शहीद से है जिसका सहायक वली मुर्शिद है।

जब तक नफ़स इमारा है किसी भी पाक क़लाम के अन्वार दिल में ठहर नहीं सकते बेशक अलफाज और आयतें ज़बानी याद क्यों न हों तोता ही है। जब मेरा नफ़स सन्तुष्ट हो जाएगा फिर नापाक चीज़ तेरे अन्दर ठहर ही नहीं सकती फिर तू मुर्श-ए-बिस्मल है। नफ़स को पाक करने के लिए नफ़स शिक्न को तलाश कर जो हर वक्त मन्जानब अल्लाह इयूटी पर मामूर है। शरीर के बाहर को तहारत पानी से होती है जबकि शरीर के अन्दर की तहारत नूर से होती है। तहारत के बगैर गन्दा और नापाक है। साफ़ शरीर इबादित-ए-इलाही के काबिल होता है जबकि साफ़ दिल तज्जलियात-ए-इलाही के काबिल होता है फिर ही आसमानी किताबें हिदायत करती हैं पाकों को (हडी अलल्मतज़ीन) वरना किताबों वाले ही किताबों वालों के दुश्मन बन जाते हैं मुज्जदद अल्फ सानी मक्तूबात में लिखते हैं कुरान उन लोगों के पढ़ने के लायक नहीं जिनके

नफस इमाराह है। मुतब्दी को चाहिए कि पहले ज़िक्र अल्लाह करे (यानि अन्दर को पाक करे) और फिर कुरान पढ़े।

हदीस- कुछ लोग कुरान पढ़ते हैं और कुरान उन पर लाअनत करता है।

बुल्हे शाह- खा कर सारा मुकर गए जिन्हां दे बगल विच कुरान

1. रोज़-ए-अज़ल वाली जहन्नमी रूह गैर-मज़हब के पैदा हो जाए, उसे काफ़िर या काज़ब कहते हैं। यही लोग खुदा से मुनकर अम्बीया और औलिया के शत्रु होते हैं। घमण्डी, कठोर दिल और मखलूक खुदा को नुक्सान पहुंचा कर खुश होते हैं। दूसरा दर्जा मज़हब में आकर भी मज़हब से दूर होता है। यही रूह यदि किसी मज़हबी दीनदार के घर पैदा हो जाए तो मनाफ़िक कहते हैं।

2. यही लोग गुस्ताख अम्बीया जलीस औलिया और मज़हबों फ़साद की जड़ (फ़ितना) होते हैं। इनकी इबादित भी अब्लीस की तरह बेकार होती है। इन्हें मज़हब जन्मत में ले जाने की कोशिश करता है लेकिन किस्मत दोज़ख की ओर खींचती है। चूंकि नवियों औलियों की सहायता से बंचित होते हैं इसलिए शैतान और नफस के बहकावे में आ जाते हैं कि तू इतना इल्म जानता है, इतनी इबादित करता है तुझ में और नवियों में क्या अन्तर है। फिर वह अपना बातन देखें बगैर अपने आपको नबी समझना शुरू कर देते हैं। और वलियों को अपने अधीन समझते हैं फिर रूहानियत और करामातों के इकरारी नहीं होते बल्कि उसी अम्ल के इकरारी होते हैं। जिन की उनमें अपनी समर्था होती है जहां तक कि चमत्कारों को भी जादू कह कर झुठला देते हैं। अब्लीस की ताकत को मान लेते हैं। लेकिन नवियों और औलियों की शक्ति को मान लेना उनके लिए मुश्किल है।

3. अज़ल वाली बहिश्ती रूह यदि गैर-मज़हबी और गन्दे माहौल में आ जाए बेबस कहते हैं। बेबस के लिए माफ़ी और बख़शिश की सम्भावना होती है। यही रूहें अपनी मुकित की तलाश में और दलदल से निकलने के लिए वलियों का आश्रय ढूँढ़ती हैं ये नर्म दिल, विनम्र और दानी होते हैं।

4. अगर बहिश्ती रूह किसी आसमानी मज़हब और दीनी धराने में पैदा हो जाए तो उसे सादिक और मोमिन कहते हैं। यही लोग इबादित, तपस्या से अल्लाह का सात्रिध्य प्राप्त करके उसकी विरासत के हक़दार हो जाते हैं।

अल्फ़ क्र व फ़खरी व अल्फ़करो मनी

तपस्वी को गुमान है कि रात को जाग-जाग कर अल्लाह की बन्दगी कर रहा है इसलिए वह अल्लाह के बहुत नज़दीक है। बन्दगी के बाद तेरी प्रार्थना स्वास्थ्य, लम्बी आयु, धन दौलत और हूर व कसूर की है। सोच ! क्या तू ने कभी भी यह दुआ मांगी थी ?

ऐ अल्लाह मुझे कुछ नहीं चाहिए सिर्फ़ तू चाहिए !

आलम (विद्वान्) को गुमान है कि मैं करबे खुदावन्दी में बख्शा बख्शाया हुआ हूँ क्योंकि मेरे अन्दर इलम और कुशन है। फिर तू दूसरों को जहन्नमी क्यों कहता है क्योंकि हरेक मुस्लिम को कुछ न कुछ इलम और कुरान की बहुत-सी सूरतें याद हैं। सोच ! इलम कौन बेचता है ? स्वयं कौन बिकता है। बलियों की गैबत कौन करता है ? ईर्ष्यालु, क्रोधी, घमण्डी कौन-कौन होता है ? दिल में और जुबान में, सुबह और शाम को और यह किसका व्यवहार है ? सच को झूठ और झूठ को सच बनाकर कौन पेश करता है ? अगर तू इन से दूर है, तू खलीफा-ए-रसूल है। तेरी तरफ पीठ करना भी बे-अदबी है यानि क़ारी नज़र आता है हक्कीकत में है कुरान।

यदि तू इन बातों में खोया हुआ है तो फिर तू वही है जिसके लिए भेड़िये ने कहा था कि यदि मैंने यूसफ को खाया है तो खुदा मुझे चौदहवीं सदी के आलमों से उठाये।

सराते मुस्तकीम

1. जिनके ज़ाहिर दरुस्त, बातन स्याह हैं मज़हब में फ़ितना है,
अब्लीस के खलीफ हैं।

हदीस—ज़ाहिल आलम से डरो और बचो जिसकी जुबान आलम और दिल ज़ाहिल यानि स्याह (काला) हो।

2. जिनके बातन दरुस्त लेकिन ज़ाहिर खराब..... उनको मज़जूब, मअज़ूर सकर और मुन्फरिद कहते हैं।

इश्क में अकल ही न रही तो हिसाब हश्र क्या ? (तरयाक क़लब)

मज़हब के लिए परेशानी लेकिन अल्लाह के सान्निध्य में होते हैं परन्तु और रुतबा प्राप्त नहीं कर सकते। बामरतबा तस्दीक नकलचिये जन्दीक़। अन्हों सदर अयूब, बेनज़ीर और नवाज़ शरीफ जैसों को उनके दौरे हुकूमत में डंडे मारे और गालियां दीं। तुम किसी साहब-ए-इक्तदार को डंडे मार कर दिखाओ यानि यह केवल उनकी जात तक सीमित है दूसरों के लिए नहीं है।

3. ज़ाहिर दरुस्त बातन भी दरुस्त..... ज़ाहिरी इबादित के अतिरिक्त क़लबी इबादित में भी होते हैं।

इन्हें आलम-ए-रब्बानी कहते हैं। यही रसूल और दीन के वारिस होते हैं और जब काज़ाहिर और बातन एक हो जाता है तो उसे नायब अल्लाह कहते हैं। यदि स्वप्न में या रूहानी तौर पर हज करता है तो ज़ाहिर मैं भी उसका दर्जा मिलता है बल्कि बाहरी हज से बहुत ही ज्यादा। रुहों की नमाज़ज़ाहिरी नमाज़ की हैसीयत रखती है। बल्कि कहीं ज्यादा। अगर ज़ाहिर में नमाज़ पढ़ता है तो बातन में भी उसकी नमाज़ मअराज बन जाती है। यही लोग हैं शरीर इधर, रुह उधर। फ़िक्र के महकमे में इन्हें मुआरिफ़ कहते हैं जबकि आशिक के लिए रब्ब का दीदार ही काफ़ी है। कुछ लोग कहते हैं दीदार हो ही नहीं सकता। लेकिन यह दीदार वाला इलम हज़ूर से शुरू हो चुका है। इमाम अबूहनीफ़ा के अनुसार, “मैंने निन्यानवे (99) बार रब्ब को देखा है। बाथीज़द बुस्तानी कहते हैं कि मैंने 70 बार रब्ब का दीदार किया है। दीदार लतीफ़ा-ए-अना से होता है और तुम अना को तालीम और ज़िक्र से अनजान हो।

अल्लाह का दोस्त

अगर किसी को खल्के खुदा क्षाफ़ वा करामात और फैज़ की वजह से बली मिलती है।

लेकिन उसके किसी फ़ेअल या मज़्हब की वजह तू दिल बर्दाश्ता है उसकी बुराई करने से बेहतर है तू उधर जाना छोड़ दे क्या खबर ! वह कोई मन्जूरे खुदा हो शेख बक्रा हो या कोई लअल शहबाज़ हो, कोई खिज़र हो।

या साहे बाबा हो या गुरु नानक हो, कोई बुल्लेशाह हो और कोई सदा सुहागन भी हो सकता है

गौहरशाही का आलम-ए-इन्सानियत के लिए इन्कलाबी पैगाम

मुस्लिम कहता है कि मैं सब से आला (उत्तम) हूँ। जबकि यहूदी कहता है कि मेरा मुकाम मुस्लिम से भी ऊँचा है। और ईसाई कहता है मैं इन दोनों से बल्कि सभी मज़हबों से बुलन्द हूँ क्योंकि मैं अल्लाह के बेटे की उम्मत हूँ।

लेकिन गौहरशाही कहता है।

सब से बेहतर और बुलन्द वही है जिसके दिल में अल्लाह की मुहब्बत है चाहे वह किसी भी मज़हब से न हो !

जुबान से ज़िक्र बन्दगी उसकी अधीनता और मरमाबरदारी का प्रमाण है जबकि क़लबी ज़िक्र अल्लाह की मुहब्बत और राज्ञे का वसीला है।

सारी आसमानी किताबें और सहीफे अल्लाह का दीन नहीं है। इन किताबों में नमाज़, रोज़ा और दाढ़ियां हैं जबकि अल्लाह इसका पाबन्द नहीं है। यह दीन नवियों की उम्मतों को मन्नवर और पाक साफ़ बनाने के लिए बनाये गये जबकि अल्लाह खुद पाकीज़ा नूर है और जब कोई इन्सान उससे मिलने के बाद नूर बन जाता है तो फिर भी अल्लाह के दीन में चला जाता है। अल्लाह का दीन प्यार और मुहब्बत है निन्यान्वे नामों का तर्जुमा है। अपने दोस्तों का ज़िक्र करने वाला है।

खुद इश्क, खुद आशिक, खुद माशूक अगर किसी बन्दा-ए-खुदा को भी उसकी तरफ से इनमें से कुछ हिस्सा मिल जाए तो वह दीन इलाही में पहुंच जाता है। फिर उसकी नमाज दीदार-ए-इलाही और उसका शौक ज़िक्रे खुदा है जहाँ तक कि उसकी जिन्दगी की तमाम सन्तों, फरजों का कुफारा भी दीदार-ए-इलाही है। जिन फ़रिश्तों और इन्सानों की मुश्तरका इबादित भी उसके दर्जे तक नहीं पहुंच सकती।

ऐसी ही शख्स के लिए शेख अब्दुल कादिर जिलानी ने फ़रमाया है कि

“जिस ने वसाल पर पहुंच कर भी इबादित की या इरादा किया तो उसने कुफरे ने अम्त किया।”

बुल्लेशाह ने फ़रमाया

“असां इश्क नमाज जदों नीती ए भुल्ल गए मन्दिर मसीती ए।”

अलामा इकबाल ने कहा-

“इसको क्या जाने बेचारे दो रकअत के इमाम।”

इस इल्म के बारे में अबूहरीरा ने फ़रमाया था

“कि मुझे हज़ार से दो इल्म अता हुए एक तुम्हें बता दिया अगर दूसरा बताऊँ तो तुम मुझे कत्ल कर दो।”

तारीख गवाह है कि जिन्होंने भी इस इल्म को खोला शाह मन्सूर और सरमद की तरह कत्ल कर दिये गये। और आज गौहरशाही भी इस इल्म की वजह से कत्ल के दहाने पर खड़ा है।

नबियों की शरीयत की पाबन्दी उम्मत के लिए होती है वरना उन्हें किसी इबादित की ज़रूरत नहीं होती। वह शरीयत से पहले ही बल्कि राजे अज़ल से ही नबी होते हैं। चूंकि उन्होंने दीन को नमूने के तौर पर पूर्ण करना होता है। उनके किसी एक सदस्य के छोड़ने या करदार को भी उम्मत सुनत बना लेती है। इस वजह से उन्हें सुचेत और चौकन्ने रहना पड़ता है।

क्या कोई शख्स यह कह सकता है कि कोई भी नबी अगर किसी भी इबादित में नहीं है तो क्या वह दोज़ख में जा सकता है। हरगिज़ नहीं।

क्या कोई शख्स कह सकता है कि इबादित के बगैर नबी नहीं बन सकता? क्या कोई यह भी कह सकता है कि इल्म सीखे बिना नबूत नहीं मिलती? फिर वलियों पर एतराज़त क्यों होते हैं? जबकि विलायत नबूत का पर्याय है।

याद रखें जिन्होंने दीदारे रब्ब के बगैर वसाल का दाअवा किया है या खुद को इस मुकाम पर तसव्वर करके नक्ल की वे ज़न्दीक और काज़ब हैं और कुरान ने ऐसे ही झूठों पर लाअनत भेजी है जिनकी वजह से हजारों का वक्त और ईमान बर्बाद होता है।

बामरतबा तस्दीक नक्कालिया ज़न्दीक झूठी नबूत का दावेदार काफ़िर

जबकि झूठी वलाइत का दावेदार कुफर के समीप है। वली दोस्त को कहते हैं और दोस्त का एक दूसरे को देखना और हमक्लाम होना ज़रूरी है।

हजूर ने भी एक बार असहाबा को कहा था कि कुछ काम सिर्फ़ मेरे करने के हैं तुम्हारे लिए नहीं है।

हर नमाजी की यही दुआ होती है कि ऐ अल्लाह मुझे उन लोगों का सीधा रास्ता दिखा जिन पर तेरा इनाम हुआ। जब तक उसकी रुह बैत अल्मामूर में जाकर नमाज न पढ़ें जिसे हक्कीकी नमाज कहते हैं क्योंकि वह नमाज मरने के बाद भी जारी रहती है जैसा कि शब-ए-मअराज में बैत अल्मुकद्दस में भी सब नवियों की रुहों ने भी नमाज पढ़ी थी और जब तक रब्ब का दीदार न हो जाए तो उस वक्त तक शरीयत की इतबाअ ज़रूरी है।

अल्बत्ता सुस्त और गुनहागार लोगों के लिए भी अल्लाह ने कुछ पर्याय बनाया हुआ है। अल्लाह के नाम का क़लबी ज़िक्र भी ज़ाहिरी इबादित और गुनाहों का क़फ़ारा करता रहता है और कभी-न-कभी उसे अल्लाह का मुहब्ब और रौशन ज़मीर बना देता है।

“जब तुम्हारी नमाजें क़ज़ा हो जाएं तो अल्लाह का ज़िक्र कर लेना। उठते-बैठते जहां तक कि करवटों के बल भी।” (कुरान)

वलियों की समीपता, निस्बत, नज़र और दुआ भी गुनहागारों के नसीब को चमकाकर दोज़ख से बचा लेती है। जैसा कि हजूर ने उम्मत के गुनगहारों की बख्शाश के लिए हज़रत अबीं करनी से भी दुआ के लिए असहाब को भेजा था। सखावत, रियाज़त और शहादत से भी गुनाहों का क़फ़ार और बख्शाश हो सकती है।

विनम्रता, तौबा और गिरयाज़ारी भी रब्ब को पसन्द है जिसकी वजह से नसूह जैसा क़फ़न चोर और मुर्दा औरतों की बेहुरमती करने वाला बख्शा गया। (कुरान)

एक दिन ईसा ने शैतान से पूछा कि तेरा बहतरीन दोस्त कौन-सा है? उसने कहा कंजूस आविद। कि वह कैसे? उसकी कंजूसी उसकी इबादित को बेकार कर देती है। फिर पूछा, “तेरा बड़ा दुश्मन कौन है?” उसने कहा गुनहागार सखी-कि वह कैसे? उसकी सखावत उसके गुनाहों को जला देती है।

खुदा के बन्दों और खुदा की मखलूक से प्यार करने और ख्याल रखने वाले, हक्क का साथ और इन्साफ़ वाले लोग भी रब्ब की कृपा दृष्टि के काबिल हो जाते हैं।

अलामा इकबाल तीसरी चौथी के विद्यार्थी स्कूल से वापिस आए तो कुतिया उन के पीछे चल पड़ी। आप सीढ़ियों पर चढ़ गये और वह बे-हस्सी से देखती रही। आपने सोचा कि शायद भूखी है। उनके वालिद ने उनके लिए एक परांठा रखा हुआ था उन्होंने आधा कुतिया को डाल दिया वह फ़ौरन खा गई फिर बे-हस्सी से देखने लगी। आपने बाकी आधा भी उसे डाल दिया और खुद सारा दिन भूखे रहे। रात को उनके वालिद को बुशारत हुई कि तुम्हारे बेटे का अम्ल मुझे पसन्द आया है और वह मन्जूर हो गया है।

जब सुब्कुतगीन हिरणी का बच्चा जंगल से उठा कर चल पड़ा तो देखा कि घोड़े के पीछे-पीछे हिरणी भी दौड़ रही है। सुब्कुतगीन रुक गया। देखा हिरणी भी खड़ी हो गई और अपना मुँह अपने आसमान की तरफ उठा लिया। सुब्कुतगीन ने देखा कि उस वक्त उसके आँसू बह रहे थे और सुब्कुतगीन ने बच्चे को आजाद कर दिया। इस घटना के बाद सुब्कुतगीन पर इतना अल्लाह की कृपा हुई कि रब्ब के नाम पर प्रायः रोया करता था।

मौलाना रूम कहते हैं कि-

यक ज़माना सुहबत-ए-बा औलिया-बेहतर अस्त सद साला तायत बेर या ।

वली की एक लहम की सुहबत सौ साला बे-रया इबादित से बेहतर है ।

हदीस कुदसी—मैं उसकी जुबान बन जाता हूँ जिससे वह बोलता है ।

उसके हाथ बन जाता हूँ जिस से पकड़ता है ।

अबूज़र ग़फ़ारी—महशर के दिन लोग वली को पहचान कर कहेंगे । ऐ अल्लाह मैंने उसे वुजू कराया था ।

जवाब आएगा उसे बछ्शा दो । दूसर कहिएगा या अल्लाह मैंने उसे कपड़े पहनाये या खाना खिलाया था ।

जवाब आएगा उसे बछ्शा दो । इस तरह भी बेशुमार लोग इनके ज़रिये बछ्शा दिये जाएंगे ।

हदीस कुदसी—जिस किसी ने मेरे वली के साथ दुश्मनी की मैं उसके खिलाफ ऐलान-ए-जंग करता हूँ ।"

अल्लाह की जंग एक दिन का सिर काटना नहीं होता बल्कि उनका ईमान काट दिया जाता है जो अगली सारी ज़िन्दगी में दोज़ख में रोज़ाना अज़ीयत से कटता रहेगा ।

जैसा कि बलीअम बाओर जो बहुत बड़ा आलम और इबादित करने वाला था लेकिन मूसा की दुश्मनी की वजह से दोज़ख में डाल दिया गया ।

लोग कहते हैं रब्ब इबादित से मिलता है

हम कहते हैं रब्ब दिल से मिलता है

इबादित दिल को साफ़ करने का साधन है अगर इबादित से दिल साफ़ नहीं हुआ तो रब्ब से बहुत दूर है ।

हदीस—न अमलों को देखता हूँ न शक्लों को बल्कि नीयतों और क़्लूब को देखता हूँ ।

अलबत्ता इबादित से जन्त मिलती है लेकिन जन्त भी रब्ब से बहुत दूर है ।

यह इल्म बातन सिर्फ उन लोगों के लिए है जो हूर व बहिश्त की परवाह किये बगैर रब्ब में मुहब्बत, समीपता और मिलन चाहते हैं ।

फिर बकौल सूराह कफ़ :

अल्लाह उन्हें किसी वली मुर्शिद से मिला देता है ।
 अकल वालों के नसीबे में कहाँ जौके जनूँ ।
 इश्क़ वाले हैं जो हर चीज़ लुटा देते हैं ।
 अल्ला अल्ला किये जाने से अल्ला न मिले ।
 अल्ला वाले हैं जो अल्ला से मिला देते हैं ।

चांद और सूरज पर तस्वीरों के बारे में पूर्ण स्पष्टीकरण

गौहर शाही रुहानी तालीम और जगह-जगह
खिताबात के ज़रिये पूरी दुनिया में प्रसिद्ध और
लोकप्रिय हो गये हैं।

1994 में मानचैस्टर (इंग्लैण्ड) में कुछ लोगों ने चांद पर गौहरशाही की तस्वीर की निशानदेही की। फिर पाकिस्तान और दूसरे देशों से भी प्रमाण प्राप्त हुए। वीडियो के ज़रिये चांद की तस्वीरें उतारी गईं। फिर बाहरी देशों और नासा से चांद की तस्वीरें मंगल्वार्ड गईं। शुरू-शुरू में तस्वीरें मद्धम थीं परन्तु पिछले दो साल से इतनी साफ़ हो गईं कि दूरबीन या कम्प्यूटर के बिना भी देखी जा सकती हैं।

1996 में हमारे प्रतिनिधि ज़फर हुसैन ने नासा (NASA) वालों को निशानदेही करवाई। उन्होंने कहा हमें पता है कि चाँद पर चेहरा है। यह चेहरा ईसा का है। जो दो सौ (200) मील लम्बी रौशनी से मालूम होता है। अमरीकी शहरियों ने भी नासा पर ज़ोर दिया कि इस तस्वीर के बारे में कुछ स्पष्ट किया जाए लेकिन (गौहरशाही का) एशियाई होने के कारण नासा खामोश रहा। बल्कि नासा के ही अन्तरिक्ष विशेषज्ञ के प्रोफैसर Dinsmore Alter ने अपनी पुस्तक Pictorial Astronomy में तस्वीर की तबदीली करके औरत के रूप में पेश किया और पूरी मिशनरी में यह अफवाह फैला दी कि चांद पर हज़रत मरियम की तस्वीर है।

जब पाकिस्तान के अखबारों में यह खबर छपी तो कुछ लोगों ने तहकीक के बाद तस्दीक की। बहुत से लोगों ने बिना तहकीक के मखौल उड़ाया। बहुत से लोगों ने इसे जादू समझा। कुछ समय बाद अन्तरिक्ष में तस्वीरों का शोर हुआ लेकिन उसका प्रभाव गौहरशाही में निष्ठा रखने वालों के अतिरिक्त कहीं भी न दिखा।

1998 में परचम अखबार में यह खबर छपी हिजर अस्वद में किसी की शबिया नज़र आ रही है। हम इस शबिया के बारे में पहले ही जानते थे। बल्कि हिजर अस्वद के कई तगरे निशान-ज़दा भी हमारे पास मौजूद थे। प्रायः प्रत्येक सरफरोश तहकीक कर चुका था। खामोशी की वजह मुसलमानों के फ़साद का डर था। लेकिन अखबारी खबर के बाद हमें भी हौसला हुआ और भरपूर अन्दाज में प्रैस रिलीज़ छापी गई। प्रायः हरेक मुसलमान ने इसकी तहकीक की क्योंकि मुसलमानों के ईमान की बात थी अधिकतर लोग सहमत हुए क्योंकि तस्वीर इतनी साफ़ थी कि इसको झुठलाना मुश्किल था। इसलिए कई लोगों ने मशहूर कर दिया कि यह भी जादू था।

प्रायः हरेक देश में चांद और हिजर अस्वद की तस्वीरें रौशनास कराई गईं। सऊदी और उसके सहयोगी बहुत गुस्से हुए जैसे कि हिजर अस्वद में तस्वीर गौहरशाही ने लगाई हो। वह कहते हैं कि तस्वीर हराम होती है हिजर अस्वद पर कैसे आ गई? यह न सोचा कि रब्ब की तरफ से कोई भी निशानी हराम नहीं हो सकती। सऊदी अरब ने अपनी शरई अदालतों से यह फैसला ले लिया है कि गौहरशाही कत्ल करने योग्य है।

यदि गौहरशाही मक्का की धरती पर क़दम रखे तो उसे कत्ल कर दिया जाए।

पाकिस्तान में सऊदी अरब के पक्षधर फ़िरके गौहरशाही और उसकी शिक्षाओं को मिटाने की भरसक कोशिश कर रहे हैं। झुठे मुकद्दमें जिनमें धारा 295 का भी मुकद्दमा बना दिया गया है और कई बार गौहरशाही पर जान लेवा हमला भी किया गया है।

अब सूरज पर भी गौहरशाही तस्वीर नुमायां हो गई है

हमने पाकिस्तान सरकार को मुकद्दमों के कारण और तस्वीरों की तहकीक के लिए कई बार कहा परन्तु अल्लाह की निशानियों को सरकारी स्तर पर फ़िरका वारियत की वजह से झुठलाया गया बल्कि नवाज़ सरकार ने सिन्ध सरकार पर ज़ोर दिया कि गौहरशाही को किसी भी तरीके से फ़ंसाया, दबाया या मिटाया जाए और अब हम फौजी हकूमत से सम्पर्क कर रहे हैं कि वह इन निशानियों की इन्साफ़ से तहकीक करे और किसी भी डर, खौफ़, दबाव या मज़हब की वजह से अल्लाह की निशानियों को न झुठलाया जाए। अल्लाह की यह निशानियां फ़ितना-फ़साद डालने के लिए नहीं बल्कि फ़ितना मिटाने के लिए हैं और इसका प्रमाण है गौहरशाही दरस को अमन और अल्लाह की मुहम्मत का दरस है जिसके ज़रिये हर मज़हब वाले अपने को सुधारने में लग गये हैं और आज हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई गौहर शाही की अक्रीदत की वजह से एक प्लेटफार्म पर जमा हो रहे हैं और इतिहास में यह पहला रिकार्ड है कि किसी मुस्लिम को गिरजों, मन्दिरों, गुरुद्वारों में वायज़ और तकरीर के लिए मसन्दों पर बिठाया गया हो।

ऐसे व्यक्ति का धन्यवाद किया जाना चाहिए जो देश के लिए सम्मान हो और अल्लाह की तरफ़ से नियत हो और उसकी सच्चाई के लिए अल्लाह निशानियां दिखा रहा है और जिसकी नज़र से लोगों के दिल अल्लाह अल्लाह में लगकर अल्लाह के महब्ब बन गये हों।

लेकिन दुश्मने औलिया दुश्मने अहल बेत के मौलवी और जमातें इनके खिलाफ़ सरगरम हो गई हैं। बे-बुनियाद मुकद्दमों, बे-बुनियाद हरबों और बे-बुनियाद प्रोपेगण्डों से लोगों का ध्यान हिजर अस्वद से हटाने की कोशिश की जा रही है जबकि यह बहुत नाजुक और अहम मस्ला है। मुसलमानों के ईमान का खतरा है तो इसकी तहकीकात के लिए खामोशी क्यों? इसके बारे में दुनिया में इसके पक्ष और विपक्ष में इतना प्रोपेगण्डा हो चुका है कि अब इसे दबाना मुश्किल है। उधर वलियों को मानने आलम गौहरशाही ईर्ष्या और खुदग़रज़ी के कारण ग़ूँगे बन गये हैं। तस्वीर को स्पष्ट होने की सूरत में झुठलाना मुश्किल हो गया तो कहते हैं कि चांद पर जादू चल गया है जबकि हज़ूर ने कहा था कि चांद पर जादू नहीं हो सकता। फ़िर कहते हैं हिजर अस्वद भी जादू की लपेट में आ गया है। अगर काबा भी जादू की जद में आ गया है तो फ़िर मुस्लिम के पास सुरक्षा की कौन-सी जगह है? मिसाल देते हैं कि हज़ूर पर भी जादू हो गया था काबा हज़ूर से अफ़ज़ल नहीं है।

इसमें शक नहीं कि हज़ूर पर जादू हो गया था लेकिन उसके तोड़ के लिए खूराह वाल्लास आ गई थी। तुम भी वाल्लास के ज़रिये चांद और हिजर अस्वद पर फूंकें मारो अगर ये तस्वीरें न मिटीं बल्कि पहले से भी ज्यादा रौशन हो जाएं तो फ़िर तुम्हें हक्क को तस्लीम करना पड़ेगा वरना फ़िर तुम्हारे अन्दर अबूजहल ही है।

(नोट)

हज़रत गौहरशाही के शायराना कलाम पर आधारित न 'तरया के कलब' से कुछ खास शेअर देखिए। यह कुछ अल्हमी और इशिकया कलाम आप ने रियाज़त और



“तरयाक-ए-कलब”

कहां तेरी सनाए कहां यह गुनाहगार बन्दा।
 कहां लाहूत व लामकां कहां यह एवदार बन्दा
 नूर सराया है तू मगर यह नुकसदार बन्दा
 कितनी जुर्त बन गया तेरे इश्क का दावेदार बन्दा
 मगर इश्क तेरा दिन रात सताये फिर मैं क्या करूँ
 इश्क तेरा दशतो जबल में रुलाये फिर मैं क्या करूँ
 पाक है जात तेरी मगर यह बे-अशनान बन्दा
 बादशाह है तू जमाने का मगर यह बे-निशान बन्दा
 मालिक है तू खजाने का मगर यह सरो सामान बन्दा
 जतलाये फिर भी इश्क तुझ से यह अन्जान बन्दा

× × ×

नहीं हूँ सवाली, फ़कीरी मेरा धन्धा नहीं
 दुनिया वालो, इश्के खुदा है इश्के बन्दा नहीं
 अरसे से हूँ आवारा मैं कोई अन्धा नहीं
 इश्क है यह अब्दी, आहू या परिन्दा नहीं

× × ×

पड़े हैं टीलों पे ये आबो ग्याही
 तुअज्जब है क्या यही काइदा-ए-फ़िकराई
 नींद गई लुकमा भी गया यह है रजा-ए-इलाई
 पड़े हैं मस्ती में नज़रें जगाये हुए गौहरशाही ।

× × ×

आ गए किधर हम यह तो सखी शहबाज की चिल्लागाह है
 वाह रे खुश नसीबी, यह हमारी भी इबादतगाह है।
 वह तो कर गये परवाज अब हमारी इन्तजारगाह है
 इस भटके हुए मुसाफिर पर इनकी भी निगाह है।
 शाहबाज की महफ़ल में जाकर भी याद तेरी सताये फिर मैं क्या करूँ
 इश्क तेरा दशतो जबल में रुलाए फिर मैं क्या करूँ ।

× × ×

हो गये कैदी हम जबलों के इक दिलदार की खातिर
 पी रहे हैं खून-ए-जिगर अनदेखे दरबार की खातिर
 सूली पे लटके गये इश्क की तार की खातिर
 जान भी न निकले इक तेरे दीदार की खातिर

× × ×

पहन कर चोगे व कलावे फ़कीर बन गए तो क्या
 पढ़कर किताबें तव्वसफ़ की, पीर बन गए तो क्या
 करके याद हदीस फ़क मुल्ला बे-तकदीर बन गये तो क्या
 अमल न किया कुछ भी फ़रउन बे-तकसीर बन गये तो क्या

× × ×

(नोट)

हज़रत गौहरशाही के शायराना कलाम पर आधारित न 'तरया के कलब' से कुछ खास शेर देखिए। यह कुछ अल्हमी और इशिकया कलाम आप ने रियाज़त और

“तरयाक-ए-कलब”

कहां तेरी सनाए कहां यह गुनाहगार बन्दा।
 कहां लाहूत व लामकां कहां यह एवदार बन्दा
 नूर सराया है तू मगर यह नुक्सदार बन्दा
 कितनी जुर्रत बन गया तेरे इश्क का दावेदार बन्दा
 मगर इश्क तेरा दिन रात सताये फिर मैं क्या करूँ
 इश्क तेरा दशतो जबल में रुलाये फिर मैं क्या करूँ
 पाक है ज्ञात तेरी मगर यह बे-अशनान बन्दा
 बादशाह है तू ज़माने का मगर यह बे-निशान बन्दा
 मालिक है तू खजाने का मगर यह सरो सामान बन्दा
 जतलाये फिर भी इश्क तुझ से यह अन्जान बन्दा

× × ×

नहीं हूँ सवाली, फ़कीरी मेरा धन्धा नहीं
 दुनिया वालो, इश्के खुदा है इश्के बन्दा नहीं
 अरसे से हूँ आवारा मैं कोई अन्धा नहीं
 इश्क है यह अब्दी, आहू या परिन्दा नहीं

× × ×

रख के दाढ़ी ऐब छुपाया तो क्या मज़ा
 रगड़ कर माथा मुल्ला कहलाया तो क्या मज़ा
 खा के ज़हर गर पछताया तो क्या मज़ा
 लुटा के जवानी खुदा याद आया तो क्या मज़ा

× × ×

फ़ाज करोनी अज़ करम कुम, फिर तुझे और तमन्ना क्या ?
 तब ही पूछेगा खुदा ऐ बन्दे तेरी रजा क्या है।
 ऐ बन्दे समझ, क्यों हुआ दुनिया में जहूर तेरा!
 तू वह अजीम तर है खुदा भी हुआ मज़कूर तेरा !
 अश अश करते कुर्री व्यां, देखते हैं जब शिकस्ता सदूर तेरा।
 फ़ख्र होता है अल्ला को बनता है जब जिस्म सराया नूर तेरा !
 कहते हैं फिर अल्ला ऐ मलाइको मेरे बन्दे की शान देखो।
 हुआ था जिस पे इन्कार-ए-सज्दा, अब उसका ईमान देखो !
 जुम्बश पे है जिसका दिल एक सिरा इधर एक लामकां देखो।
 नाज़ है तुम को भी इबादत का मगर इबादत कलब-ए-इन्सान देखो !

× × ×

बनाया फिर बसेरा पहाड़ों में और तलाश-ए-यार हुए
 बहुत ही मगलूब थे हम, जो आज शिक्न-ए-हिस्सार हुए,
 कर ले जब भी तौबा, वह मन्जूर होती है
 बन्दा बशर है जिससे गल्ती ज़रूर होती है
 कहते हैं मूसा अल्ला का वही इबादित महबूब होती है
 जिस में गुनहगारों का गियाजारी खूब होती है।

× × ×

कुफ़लों वाले करेंगे कैसे यकीन हम पर
 कि हो चुका है इतना महरबान रव अल आल्मीन हम पर
 खोल चुका है असरार हूरो नाज़नीन हम पर
 कि बस रहा है जुस्सा तौफ़ीक इलाही ज़मीन हम पर।

× × ×

यह राज़ छुपा कर करेंगे क्या, अब तो दुनिया फ़ानी है
 इन्तज़ार था जिस क्यामत का अन्करीब आनी है
 दजालो रजाल पैदा हो चुके यह भी एक निशानी है
 ज़ाहिर होने वाला है महदी भी, यही राज़-ए-सुल्तानी है।

× × ×

नमाज़ भी पढ़ा दी मौलाना ने कुरान पढ़ना भी सिखा दिया
 कलमे भी पढ़ाये हदीसें भी बहुत कुछ म़गज़ में विठा दिया
 बता न सका दिल का रास्ता, बाकी सब कुछ पढ़ा दिया
 यही इक खामी थी अब्लीस ने सब कुछ जला दिया।

× × ×

पूछा मूसा ने अल्ला से तुझे कोई पाये तो कहां पाये कहां
 मैं आता हूँ कोहे तूर पर वो जाए तो कहां जाये कहां
 गर हो कोई मशरिक में पैदा तो वह तूर बनाये कहां
 आई आवाज़ हूँ जाकर के क़लब में ज़मीं पे हो या आसमां।

× × ×

मिला था कतरा नूर का करके तरक्की लहर बन गया।
 आई तुगयानी टकराया बहर से और बहर बन गया।
 न रही तमीज मनो तन की दिल था दहर बन गया
 बस गया अलम इस पे इतना कि इक शहर बन गया
 इस नुकता की तलाश में कितने सिकन्दर उमर गंवा बैठे
 खुश नसीबी में तेरी शक क्या घर बैठे ही यह राज पा बैठे।

× × ×

सूरज चढ़ा तो निकला पेट के जंजाल में
 घर आया तो फंसा बीबी के जाल में
 सोया तो वह भी बच्चों के ख्याल में
 उमर यूँ ही पहुंच गई सत्तर साल में
 हुआ जब काम से निक्कमा लिया दीन का आसरा
 अब कहां है खरीदार, बैठा जो हुस्न लुटा
 बेशक कर नाज नखरे और जुल्फों को सजा
 वक्त जो था तेरा, वह तो बैठा गंवा
 करके ज़िक्र चार दिन बन गया जन जहानी है
 धोखा है तेरी अक्ल का, जो हो गई पुरानी है
 अब कुछ त्वक्को अल्ला से यह तेरी नादानी है
 काविल तू नहीं, गर बछ्श दे उसकी महरबानी है।
 इबने लगा फरऊन वह भी ईमान ले आया था
 करके दावा खुदाई वह भी पछताया था
 कर ली तौबा आखिर में वह वक्त हाथ न आया था
 जिस वक्त का कुदरत ने बन्दे से वादा फरमाया था।

× × ×

यह तो वह अम्ल है आसियों को भी मजीब मिल जाते हैं
होते हैं जो बे-नसीब उन्हें भी नसीब मिल जाते हैं
नहीं है फर्क ख्वान्दा नाख्वान्दगी का, कि खतीब मिल जाते हैं
दूंढ़ती है दुनिया जिनको सितारों में करीब मिल जाते हैं।
पारस भी इसी में कीमिया भी इसी में
वफ़ा भी, हया भी, शफ़ा भी इसी में,
रजा भी बका भी लक़ा भी इसी में
खुदा की क़सम जात-ए-खुदा भी इसी में
पड़ा है बुत इधर लटकी हुई है जाम उधर
दे रहे हैं सजदे इधर वहमो गुमान उधर
लिखते हैं स्याही से, पड़ता है लहू का निशान उधर
बूदो बाश इस जंगल की, ज़िन्दगी का सामान उधर
टपके आँखों से आंसू दो चार, बन गये दर्द ताबान उधर
फड़का जब दिल कबूतर की तरह हो गये फरिश्ते हैरान उधर
आ गये रक्षक में, काश हम भी होते इन्सान उधर
यह तो वही खस्ता हाल था, जो हो गया सीना तान उधर
कहा बुत्त को कि चल इस दुनिया से, कि बन गया मकान
यह तो इक धोखा था, पड़ा है जो बे सरो सामान उधर।

× × ×

न कर शुबा, चोर भी ओतादो अख्यार बन बैठे।
आये पारस के हाथों, खुद ही सरकार बन बैठे।
मारा नफ़स को और हक्क के खरीदार बन बैठे।
हक्क ने लिया गर, सूखे कांटे भी गुलजार बन बैठे।

× × ×

इस ज़िन्दगी से गये, पाया जब सुरागे ज़िन्दगी।
 पाया फिर वसीला ज़फर, मिटाया जब दागे ज़िन्दगी।
 निकले फिर दुनिया के अन्धेरे से, जलाया जब चिरागे ज़िन्दगी।
 धोया आंसुओं से क़त्लब को, बसाया जब बागे ज़िन्दगी।
 निकला उस चमन से ताइरे लाहूती, और किया नबाजे ज़िन्दगी।
 हुए जब कबरो घर यकसां, और किया फ़्रयाजे ज़िन्दगी।
 ज़िन्दगी में ही देखा यो में महशर, और किया ब्याजे ज़िन्दगी।
 पी बैठे खूने जिगर खातरि हक, और किया रयाजे ज़िन्दगी।

× × ×

रखा तूने अर्से तक इस नेअमत से महरूम क्यों ?
 नफ़स हमसे शौकी, जब यह नुक्ता अदविस्तान से पकड़ा
 हो गये पाक सब जुस्से जल के, बुत के सिवा
 रुठा बुत जो जलने से, उसको कब्रिस्तान से पकड़ा।
 अब आने लगी आवाज़, हर रग से अल्ला हू की।
 यह स्कून हमने कुछ ज़मीन से, कुछ आसमान से पकड़ा।
 क्या बताऊँ तुझे कि, दिल की ज़िन्दगी है क्या।
 डाल कर कमन्द हमने इसक कहकशां से पकड़ा।
 बन बैठे आज, हम भी तालबे मौला लेकिन
 सुलझे थे, जब यह रास्ता इक इन्सान से पकड़ा।
 हिदायत है इन्सान को इन्सान से ही ए कोरे चश्म।
 वसीला इन्सान ने इन्सान से शैतान ने शैतान से पकड़ा।

× × ×

सोचा था इक दिन हमने, यह वजह तन्ज़ल क्या है ?
रहते हैं सर गरदा हर दम यह ज़िन्दगी बे-मंज़िल क्या है ?
कौन सी खामी है वह, रहते हैं परेशान हर दम ?
सुधर जाए जिससे दीनों दुनिया वह अम्ल क्या है ?
झांका गरेबान को नज़र आई हज़ारों खामीयां।
रोए बहुत आया जो समझ में मक्सदे असल क्या है।
निकले फिर ढूँढ़न रहनुमा को, इस अन्धेर में।
भटकत रहे बरसों, समझ नहीं थी पीरे अक्मल क्या है ?

× × ×

कर बैठा इश्क इक बेपरवाह से अन्जान से
तड़पता रहेगा भट्टी में बरसों यह खाकाना दिल
आ जाये बाज़ ज़िद से नहीं है मुमकिन ए रयाज़
दे चुका है तहरीर समेत गवाहां यह जलालाना दिल।

× × ×

जिस हाल पे रखे तू, उसे पे हैं शादां हम
दिखता रहे फ़क्त नाम तेरा, हुए जिस पे कुर्बान हम
रुल के इस मिट्टी में होगा न जबां को शिकवा तेरा
हो गये नाम लेवाओं में तेरे इसी पे नाजां हम
न कर शुबा ए आसमान, इन गेसुओं पे हमारे
तमन्ना नहीं कुछ उसी के दीदार को गरयां हम
खा न गम तू देख के खूने जिगर को हमारे
यही प्याला है बैठे हैं देने को जिसे तरसां हम
कसम है तुझे शहबाज़ कलन्दर की ए लाल बाग
गवाह रहना बैठे हैं अर्से से बे गौरो कफ़ा हम।

रिस चुका होगा पत्ते-पत्ते में तेरे ओजे इश्क
 रखना सम्भाल के अमानत बनाएंगे कभी गोरे लरजां हम
 समझेगा क्या मेरी दादों फ़रयाद को यह ज़माना
 यह तो इक अज़ज़ था कर वैठे जिसे अफ़शां हम
 आता न था दिल को चैन कभी न कभी ए रयाज
 यह भी एक मर्ज़ था बना बैठ कलम को राजदां हम
 पहले तो पकड़ इस जासूस को कहते हैं जिसे नफ़स
 आ न सकेगा गरिफ़त में न कर फ़कीरी में उमर तवाह
 इधर तो चाहिए इल्मों हलम और दिल कुशादा जानी
 फिर सब्रो रजा और मुर्शिद जो हो शहों से आगाह

× × ×

न छेड़ किस्सा बाद-ए-निकहत का वीराने में ऐ दीवाना दिल
 ढूँढ न शहरे खामोशो में वह शहनाइयां ए मस्ताना दिल
 रख न तमन्ना इन लाशों से सितारों के अलावा
 था बेशक खा की तू हो गया अब जो अरशियाना दिल
 न रख उमीद हम सफ़र से कुछ ए महबूबा
 था जो कभी शैदाई तेरा, था वह पुराना दिल
 न रख तू भी आस कोई ऐ मेरी जन्नत
 बाबा था आगोश में हो गया वह बेगाना दिल
 बना के लहद मेरी रो लेना दो चार दिन
 था जो सपूत तेरा मिट गया वह फ़साना दिल
 कर देना भरती यतीमखाने में भी उनको
 मर गया बाप इनका ढूँढते-ढूँढते खजाना दिल।

दीन हुसैन के बारे में

मिला जिससे ईमान कुछ गर वह साक्षे शाहाब था
 लरजी मिट्टी जिसके खून से वह मुहाफ़िज नूरे किताब था
 अट गया फिर धूल में उसका मुर्गे लाहूती
 कर न सका परवाज फिर तुश्ना दुनिया मास था
 हो गये फिर येवस्त उसके बैजे खाक में
 हुआ फिर तायर भी खाकस्तर जो शोला आफ़ताब था
 समाई उसमें वह बू आई फिर वह खू
 भूला सबक़ वहै लाया जो टुकड़ा नसाब था
 ढूंढ के आसान हीला मज़हब में तरमीम की
 निकले फिर हीले कई, मुल्ला व मुफ़ती वे हिसाब ।

× × ×

न तासीरे गुफ़तार न ताकते रफ्तार न अख्जे किरदार तेरा
 न खौफ़े कवर, न यादे खुदा तेरी यह मुसलमानी क्या है ?
 पढ़ के काफ़िर इक ही बार ला इला इल्लिला हो गया खुल्दी
 नहीं असर धड़ा धड़ ला इलाओं से यह नातवानी क्या है
 माल मस्त, हाल मस्त, जाल मस्त बन न सका लाल मस्त
 बैठे हो आड़ में दीन की यह सक्के बेइमानी क्या है ?
 शबे बेदार तू, परहेजगार तू न हक्कदार तू
 समझता है खुद को मोमन और नादानी क्या है ?

× × ×

रखा था जिसने भी सब्र, उसका मुकाम इन्तहा होता है
 कि नहीं है जिनका आसरा कोई उनका खुद होता है
 हुआ गर बरबाद राहे हक्क में बवक्ते जवानी
 वही है वाज़ीद जो पुतला वफ़ा होता है ।

मारा गर हवस व शहवत को रह के दुनिया में
 वही तालेए किस्मत जो इक दिन बाखुदा होता है
 की गिरये जारी गुनहागार ने किसी वक्ते पशेमानी
 कभी न कभी वह कावे में सिजदा गिरा होता है।

× × ×

हम इश्क में बरबाद, वह बरबाद हमारे जाने के बाद
 हुई इश्क को तस्ली कितनी जानें रुलाने के बाद
 आए याद बल्ले, आया सब्र फिर आंसू बहाने के बाद
 न रही ताक्ते गुफतार अब यह दुखड़ा सुनाने के बाद

× × ×

कहा इकबाल ने दर-ए-दिल के वास्ते आया आदमी
 समझे थे हम शायद इकबाल से कुछ भूल हुई।
 घूमते रहे हम भी कुछ अर्सा तक इन गरदाबों में
 हुआ जब दिल को दर्द फिर जिन्दगी कुछ हसूल हुई
 यह हीला नफस था, बुत में भी हमारे
 समझा नफस को दिल को ताज़गी कबूल हुई
 आ गये थे अच्छे रुज़अत में पा कर यह सबक
 समझाया जो हक्क बाहु ने कुछ अक्ल दखूल हुई
 न खिदमत से न ही सखावत से हुआ कोई तगीर
 हुआ जब ज़िक्र-ए-कलब जारी कुछ रोशनी हलूल हुई।

पुस्तक की जानकारी के लिए कुछ संक्षिप्त व्यान



1. यदि आप किसी धर्म के मानने वाले हैं लेकिन अल्लाह के प्रेम से बंचित हैं, इससे वे लोग अच्छे हैं जो किसी धर्म में नहीं परन्तु अल्लाह के प्रति प्रेम रखते हैं।
2. प्रेम का सम्बन्ध मन से है, जब मन की धड़कन के साथ, “अल्लाह अल्लाह” मिलाया जाता है तो वे रक्त के द्वारा हमारी नस-नस में पहुँच कर आत्मा को जगाता है। फिर आत्माएं, अल्लाह के नाम से शराबोर हो कर, अल्लाह के प्रेम में लीन हो जाती हैं।
3. रब्ब का कोई भी नाम चाहे वह किसी भी भाषा में हो आदरणीय है परन्तु रब्ब का असली नाम सरयानी भाषा में ‘अल्लाह’ है जो कि अर्शियों की भाषा है। इसी नाम से फरिशते उसे पुकारते हैं और हर नबी के कलमे के साथ जुड़ा है।
4. जो भी व्यक्ति सच्चे मन से रब्ब की तलाश में गुम है वह भी आदरणीय है।
5. इस संसार में एक ही समय में भिन्न-भिन्न स्थानों पर कई आदम आए। सभी आदम संसार में संसार की ही मिट्टी से बनाए गए, जबकि अन्तिम आदम जो अरब में दफन हैं। वे अकेले ही स्वर्ग की मिट्टी से बनाए गए। इनके अतिरिक्त किसी और आदम को फरिशतों ने सिजदा नहीं किया, अलबीस इसी आदम के बंशजों का शत्रु हुआ।
6. मनुष्य के शरीर में सात प्रकार की ज्ञानेन्द्रियां हैं जिनका सम्बन्ध अलग-अलग आसमानों, अलग-अलग स्वर्गों और मनुष्य के शरीर के अलग-अलग कार्यों से है। यदि उनको नूर की शक्ति पहुँचाई जाए तो यह उस मनुष्य के रूप में एक ही समय में कई स्थानों, यहां तक कि बलियों, नवियों की बैठक और ईश्वर से वार्तालाप एवं दर्शन तक पहुँच सकती हैं।
7. हर व्यक्ति के दो धर्म होते हैं, एक शरीर का धर्म जो मृत्यु के बाद समाप्त हो जाता है, दूसरा आत्मा का धर्म जो कि रोज़-ए-अज़ाल में था, यानि रब्ब से प्रेम, इसी के द्वारा मनुष्य का स्थान ऊँचा होता है।
8. सब धर्मों से बड़ा रब्ब का प्रेम है और सब वन्दनाओं से बड़ा रब्ब का दर्शन है।
9. मनुष्यों, जीव-जन्तुओं, पेड़-पौधों और पत्थरों से सम्बन्धित जानकारी कि यह किस प्रकार जन्मे और इनमें क्यों कोई हराम और कोई हलाल हुआ।
10. आत्माओं और फरिशतों से भी पहले कौन-सी नस्लें (मखलूक) थीं? वह कौन-सा कुत्ता था जो हज़रत कतमीर के नाम से स्वर्ग में जाएगा और वे कौन से लोग हैं जिनकी आत्माओं ने संसार की सृजना से पूर्व ही कलमा पढ़ लिया था।
वो कौन-से व्यक्ति का रहस्य है जो इस पुस्तक में नहीं है? ज्ञान और गहन जानकारी के लिए इस पुस्तक को ज़रूर पढ़िए।